सत्यमेव जयते

अवध गरिमा

12वां अंक

जनवरी 2022

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
फैज़ाबाद

संयोजक
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह, कानपुर

27 नवम्बर, 2021 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उत्तर क्षेत्र–1 तथा उत्तर क्षेत्र–2 के एक दिवसीय क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैज़ाबाद द्वारा उपस्थिति दर्ज की गयी. वर्ष 2018–19 के लिये नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैज़ाबाद को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. उक्त आयोजन के दौरान माननीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय एवं माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा के कर–कमलों से शील्ड प्राप्त करते हुए समिति अध्यक्ष श्री अनिल कुमार झा.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैज़ाबाद की 13वी अर्द्ध–वार्षिक बैठक

सत्यमेव जयते

अवध गरिमा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति फैज़ाबाद

जनवरी 2022

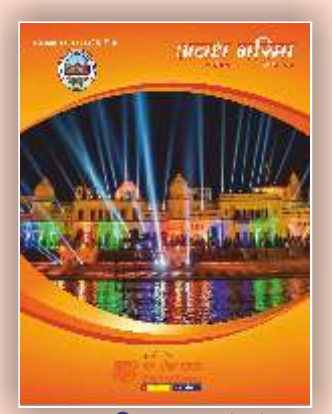

अवध गरिमा का 11वां अंक

संरक्षक : अनिल कुमार झा
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैज़ाबाद, एवं क्षेत्रीय प्रमुख, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या.

संपादक : श्री नीरज कुमार सिंह
सदस्य सचिव, नराकास, फैज़ाबाद एवं प्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या.

संपादन मंडल : श्री संतोष कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), पंजाब नैशनल बैंक.
श्री पवन कुमार, कनिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी, राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय.
श्री मयंक तिवारी, पी.जी.टी. हिंदी, जवाहर नवोदय विद्यालय.
श्री संजयधर द्विवेदी, कार्यक्रम अधिशासी, आकाशवाणी.
श्री रजत कुमार, पी. जी. टी, हिंदी, केंद्रीय विद्यालय.
श्री सुरेन्द्र यादव, प्रबंधक (राजभाषा), सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया.

संपर्क : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैज़ाबाद, बड़ौदा भवन, साकेतपुरी आवासीय योजना, देवकाली बाईपास, पोस्ट अयोध्या, जिला अयोध्या – 224123 ईमेल : rajbhasha.faizabad@bankofbaroda.co.in

अनुक्रमणिका

इस अंक में...

- सहायक निदेशक महोदय का संदेश... 2
- अध्यक्ष महोदय का संदेश..... 3
- सदस्य सचिव की कलम से.... 4
- उफ्फ ये गर्मी 5
- ख्वाबों के परिंदे 6
- आत्मनिर्भर भारत अभियान में बैंको की भूमिका 7
- एक–दो–तीन 9
- हालात 10
- नराकास, फैज़ाबाद की 13वी अर्द्ध–वार्षिक बैठक 11
- ऑनलाइन संगोष्ठी 12
- अन्य गतिविधियां 13
- विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिंदी – श्री अमित श्रीवास्तव 14
- विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिंदी – श्री मयंक तिवारी 15
- विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिंदी – सृष्टि 16
- विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिंदी – सनी सोनी 17
- रामधारी सिंह 'दिनकर' – कवि व निबन्धकार 18
- विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिंदी – श्वेत शिखर त्रिपाठी 24
- नानी की गौरी 25
- खिलौने 28
- माँ 28
- सामाजिक पतन 29
- मानवता 29
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैज़ाबाद – सदस्य कार्यालयों की सूची: ... 30

संयोजक

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
विजया VIJAYA | देना DENA

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,
उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–2,
302, सी.जी.ओ.भवन–1, कमला नेहरू नगर,
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) –201002
दूरभाष/फैक्स–0120–2719356
ई–मेल–ddriogzb-dol@nic.in
एवं rionorthgzb@gmail.com

फा.सं.–क्षे.का.का.उ./पत्रिका–संदेश/500

दिनांक – 17/01/2022

संदेश...

अत्यंत हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद अपनी गृह पत्रिका ''अवध गरिमा'' के 12वें अंक का प्रकाशन करने जा रही है। विश्वास है कि ''अवध गरिमा'' का यह अंक भी पूर्व अंकों की तरह संग्रहणीय होने के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने में भी अवश्य ही सहायक सिद्ध होगा। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों, रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

17/1/2022

(नरेन्द्र सिंह मेहरा)
सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) एवं कार्यालयाध्यक्ष

अध्यक्ष महोदय का संदेश.....

प्रिय साथियो,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैज़ाबाद की छमाही पत्रिका ''अवध गरिमा'' के माध्यम से पुन: आपसे संवाद करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है. जैसा कि आप सभी को विदित है कि नवम्बर, 2021 में ''अवध गरिमा'' के 11वे अंक का विमोचन किया गया था. पुन: जनवरी, 2022 में ''अवध गरिमा'' के 12वे अंक का विमोचन किया गया है जिसके लिये मैं समस्त संपादन मंडल को हार्दिक बधाई देता हूं जिन्होंने अपने दृढ़ संकल्प एवं कठिन परिश्रम से दो माह के अंतराल पर ही पत्रिका का प्रकाशन संभव किया. इस आपा–धापी के बीच भी समिति सदस्यों द्वारा सुचारू रूप से पत्रिका का प्रकाशन किया जाना हर्ष का विषय है. **जार्ज एस पैटन** का एक वक्तव्य मुझे याद आता है :

''चुनौतियों को स्वीकार करें ताकि आप विजय के आनंद का हर्ष महसूस कर सके''

प्रसन्नता की बात है कि ''अवध गरिमा'' पत्रिका की सामग्री विविधतापूर्ण, आकर्षक व रोचक है. इसके लिये मैं सभी लेखकों व रचनाकारों को हार्दिक बधाई देते हुए आशा करता हूं कि आगामी अंकों में इसी प्रकार का आपका रचनात्मक सहयोग ''अवध गरिमा'' को एक नयी ऊँचाई पर स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगा. पत्रिका का नियमित प्रकाशन समिति के अधीन विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत प्रतिभाओं को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को संवारने के लिये एक मंच का कार्य करेगा एवं साथ ही विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार–प्रसार के लिये हो रही गतिविधियों की जानकारी भी देगा. आशा है कि इस पत्रिका में शिक्षाप्रद और रचनात्मक सामग्री के साथ–साथ भाषा, साहित्य तथा आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का भी दर्पण मिलेगा.

पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले स्टॉफ सदस्यों को मैं हार्दिक बधाई देता हूं और कामना करता हूं कि आप सभी पत्रिका के अनवरत प्रकाशन के लिये अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे.

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं !

अनिल कुमार झा
अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैज़ाबाद
एवं क्षेत्रीय प्रमुख, बैंक ऑफ़ बड़ौदा

सदस्य सचिव की कलम से.....

प्रिय साथियो,

समिति की छमाही पत्रिका ''अवध गरिमा'' के माध्यम से आपके साथ अपने विचारों को साझा करने का अनुभव मेरे लिए हमेशा ही सुखद होता है. समिति की गतिविधियों, व्यावसायिक उपलब्धियों का चित्र आपके सामने प्रस्तुत करना हमारा मुख्य उद्देश्य रहा है, जिसके माध्यम से हम अपने सामयिक प्राथमिकताओं से आपको अवगत करा रहें हैं. यह पत्रिका हमारे सदस्य कार्यालयों के साथियों की प्रतिभा की अभिव्यक्ति हेतु सार्थक मंच प्रदान करती रही है.

अपनी भाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है. अपनी भाषा में मौलिक लेखन बहुत ही सहज और स्वाभाविक होता है. हिंदी ने सभी भारतवासियों को एक सूत्र में पिरोकर सदैव अनेकता में एकता की भावना को पुष्ट किया है. हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम है. हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता व सुबोधता है. हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है वहीं लिखा जाता है.

इस अंक में विभिन्न कार्यक्रमों, गतिविधियों के सचित्र विवरण हमने प्रस्तुत किए है. विभिन्न लेखकों द्वारा प्रस्तुत ''विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिंदी'' बहुत ही प्रासंगिक लेख है. वहीं, कहानी और कविताओं के साथ–साथ समिति को प्राप्त पुरस्कार के संबंध में भी रिपोर्ट को इस अंक में शामिल किया गया है. पत्रिका के सभी पाठकों से सादर अनुरोध है कि वे इस अंक के बारे में अपनी प्रतिक्रिया एवं बहुमूल्य सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएं.

शुभकामनाओं सहित !

नीरज कुमार सिंह
सदस्य सचिव,
नराकास, फैज़ाबाद
एवं प्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ़ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

उफ्फ ये गर्मी

श्री सुभाष त्रिवेदी
वरिष्ठ प्रबंधक (क्रेडिट)
बैंक ऑफ़ बड़ौदा

आज सन्डे था, मैं दोपहर को पत्नी जी के हाथ का गरमा गरम लंच करने के बाद आराम करने की मंशा से बेडरूम की ओर तेजी से लपका ही था, कि पीछे से पत्नी जी की आवाज आई, देखिएगा पंखा मत चलाइयेगा, आज सुबह से लाइट नहीं आई है इन्वर्टर भी बोलने ही वाला है.

कुछ पत्नी जी के हाथों के बनाये हुए खाने का असर था,कुछ सूर्य देवता का प्रचंड प्रकोप, इतनी गर्मी कि मैंने पत्नी जी बातों को नजरंदाज करते हुए (हालाँकि मैं हमेशा ऐसा नहीं करता) पंखा चला लिया और बेड पर पसर गया. अभी नींद के आगोश में पूरी तरह गया भी नहीं था, कि वही हुआ, टीं टीं की आवाज के साथ इन्वर्टर ने आत्म समर्पण कर दिया और पंखा बंद हो गया. इन्वर्टर का टीं टीं बंद हो, उससे पहले पत्नी जी की जोरदार आवाज आई, ''मैंने कहा था न, पंखा न चलाना'' ''आप मेरी बात सुनते कहाँ हो''. पत्नी जी पास में आती उससे पहले नींद दूर भाग गयी. पत्नी जी का सामना न करना पड़े और शायद कुछ हवा भी लगे ये सोचकर मैं कुर्सी लेकर बालकनी में आ गया.

सूर्य देवता का गुस्सा आज सातवें आसमान पर था, पसीने की बूंदों में माथे से टपककर गालों को चूमने का कंपटीशन चल रहा था, और उँगली, विलेन बनकर उन सबको एक साथ निचोड़कर बाहर फेंक रही थी. मैं सामने दूर तक फैले कंक्रीट के जंगलों को इस उम्मीद के साथ निहार रहा था, कि शायद हवा का कोई झोंका आएगा और तपती गर्मी से कुछ राहत मिलेगी.

हवा का झोंका आया और अपने साथ पुरानी यादें भी ले आया और मैं न जाने कब उन यादों में खो गया. ये गर्मी हमारे बचपन में भी तो आती थी. कभी कूलर और पंखे की जरुरत ही नहीं महसूस होती थी. पूरी दुपहरी दरवाजे के दूसरी ओर लगे बरगद के पेड़ के नीचे खेलते हुए बिताते थे.वो हमारे लिए पेड़ नहीं ,बरगद बाबा थे. वो बारिश से बचने के लिए उनके तने के नीचे बैठना, और डाल पर पड़ने वाला वो झूला, कितनी सारी यादें जुड़ी थी बरगद बाबा से.दोस्तों के साथ होने वाले सारे लड़ाई–झगड़ों और मान–मनव्वल सब के गवाह थे बरगद बाबा.

और वो आँगन में लगा तुलसी का पेड़, उससे भी तो एक अलग ही रिश्ता था मेरा. कैसे माँ के साथ हर रोज तुलसी माता पर जल चढ़ाया करता था. और माँ तो कभी बिना जल चढ़ाये खुद पानी भी नहीं पीती थी. कैसे जब कभी मुझे खांसी होती तो माँ कहती बेटा तुलसी की चार पत्तियां तोड़ कर मुँह में रख लो. मेरी खांसी का अचूक इलाज थी वो चार पत्तियां.माँ तो मानों बातें करती थी उस नन्ही तुलसी से.किसी भी बड़े काम की शुरुवात से पहले हाथ जोड़कर बैठ जाती थी उसके सामने. हमारे घर का सदस्य थी हमारी अपनी तुलसी.

आज ज़माने के साथ कदम मिलाकर हमारे गाँव ने भी तरक्की की है,दरवाजे के दूसरी ओर लगे बरगद बाबा की जगह एक चौड़ी सड़क बन गयी है. जिससे होकर बहुत सारी गाड़ियाँ गुजरती हैं.बच्चों की खिलखिलाहट और पच्छियों के कलरव की जगह वहाँ गाड़ियों का शोर सुनाई देता है.

मेरा घर भी अब एक ऊँची ईमारत है, जिसमें कई सारे कमरे हैं मगर आँगन ही नहीं है, तुलसी के पौधे की क्या बात करें. घर के कोनों पर आर्टिफिसियल प्लांट्स नजर आते हैं, जिन्हें लगाया नहीं जाता रखा जाता है. इन्हें पानी नहीं देना पड़ता, शायद इसीलिये हमारा कोई रिश्ता नहीं बन पाता इनसे.

"आ जाइये लाइट आ गयी है," पत्नी जी की आवाज से मैं मानों चौंक सा गया.

मैं उठकर कमरे में जाकर लेट गया, जहाँ पत्नी जी ने ए.सी. चला रखा था. मुझे ए. सी. की ठंडी हवा में भी नींद नहीं आ रही थी.

पत्नी जी ने मानों मेरे चेहरे को पढ़ लिया था, बोली क्या हुआ क्या सोच रहे हो.

मैंने पत्नी जी को बरगद बाबा से तुलसी के पेड़ तक की सारी बातें बताना शुरू किया, न जाने कब मुझे नींद आ गयी थी.

अगले दिन शाम को जब मैं ऑफिस से घर लौटा तो पत्नी जी मुझे सबसे पहले बालकनी में ले गयी जहाँ गमले में एक नन्हा सा तुलसी का पौधा मुस्कुरा रहा था.

*****

ख्वाबों के परिंदे

ख्वाबों के परिंदे फिर उड़ चले ज़ख्मी पंखों पर सवार हो कर,
नौसिखिये परिंदों को बाज़ बनाने का हुनर आप ही से आता हो कर,
जब सुझती नहीं है कोई राह तो राहों को सरल बनाने का रास्ता भी गुजरता आप ही से हो कर,
सपने ऊंची ऊंची उड़ानों के गुजरते भी है तो आप ही से हो कर.

लक्ष्य नहीं दिखलाई पड़ता, मन का अंधियारा भी नही मिटता,
कोई एकलव्य तो कोई अर्जुन बनता, राम तो क्या साक्षात कृष्ण को भी तो आप ही के द्वार आना पड़ता,
कोई भी अभियान पूरा कहा? हो पाता, गुरु बिन ज्ञान कहा? ही आ पाता.

उड़ानों का जज्बा ही तो आप ऐसा भरते की जमीं कम पड़ जाती है,
सपनों को मंजिल मिल जाती है जिनकी आपसे गुफ्तगू हो जाती है,
जब तक रहती गुरु से दूरी है, होती कहा? मन की प्यास पूरी है,
गुरु मन की सारी पीड़ा हर लेते है, दिव्य, सरल, सरस, सुगम जीवन कर देते है.

आपकी काया बूढी भी हो चली तो क्या हुआ आप औरों को उनके जवां हौसले देते है,
एक बसेरा बना के फिर दूसरा बसेरा बनाने मखमली बादलों के उस पार चल देते है,
अविरल बहते रहते है सारे जहां "अलख" का प्रकाश फैलाते रहते है॥

**** सभी आदरणीय शिक्षकों को समर्पित ****

आत्मनिर्भर भारत अभियान में बैंको की भूमिका

अखिलेश शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक
केनरा बैंक

आत्मनिर्भर होना हर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का सपना होता है. हमारी भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी कहा है कि एक राष्ट्र की शक्ति उसकी आत्मनिर्भरता में है, दूसरों से उधार लेकर काम चलाने में नहीं.

आत्मनिर्भर राष्ट्र ही अपने राष्ट्र को सर्वोपरि बना सकता है, क्योंकि जो राष्ट्र आत्मनिर्भर होता है एवं अपने पैरों पर स्वयं खड़ा खड़ा होता है, वही अपने आप में सबसे सबल एवं समृद्ध होता है.

वर्तमान समय में यदि हम इतिहास के पृष्ठों को पलट कर देखें तो हम पाएंगे की हमारा देश जब अंग्रेजो के अधीन रहा, यह अपने विकास के लिए उन्ही पर निर्भर था, लोग चाहकर भी अपना और देश का विकास नहीं कर सकते थे, क्यूकि आस्ता थी, दासता थी, दूसरों पर निर्भर रहना ही तो दासता है.

किंतु स्वतंत्रता के उपरांत भारत आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हुआ, आत्मनिर्भरता से हम क्या पा सकते है ये शायद हमने जान लिया और आज स्थिति यह है कि यह विश्व पटल में हमारा देश अपना नाम चमकाता आ रहा है. अब हम जान गए है की आत्मनिर्भर होना ही हमारी पहचान है और भारत अगर प्रगति करता है, तो वह दुनिया की प्रगति में भी अपना योगदान देता है, हमारा देश तो प्राचीन काल से ही ''वसुधैव कुटुम्बकम'' को मानते आया है.

आत्मनिर्भर भारत के लिए हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने कोरोना संकट के इस दौर में भारत की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए 20 लाख करोड़ रुपये के राहत पैकेज का ऐलान किया था. इस पैकेज को आत्मनिर्भर भारत अभियान का नाम दिया गया है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कहना है कि इस बड़े राहत पैकेज से भारत में लोगों को कामकाज करने की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी और यह कोशिश की जाएगी कि अगले कुछ सालों में भारत अपनी जरूरत की अधिकतर चीजों के लिए खुद पर निर्भर हो जाए. इस हिसाब से अभियान का नाम आत्मनिर्भर भारत अभियान रखा गया है.

माननीय प्रधानमंत्री जी ने जो यह कार्यक्रम चलाया है उसका उद्देश्य दूरगामी है, ये वो आधार है जिससे भारत अपने पैरों पर खड़ा हो सके और भारत की विश्व पटल पर एक अलग पहचान बन सके.

हमारे महामहिम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का सपना था कि भारत स्वदेशी चीजों को अपनाएं तथा देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाएं. वर्तमान समय में फिर से आज मुझे उनका यह सपना पूरा होता नजर आ रहा है. आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में वैश्वीकरण का बहिष्करण नहीं किया जाएगा अपितु दुनिया के विकास में मदद की जाएगी. आत्म निर्भरता का अर्थ यह नहीं है कि हम अन्य किसी देश के समान का आयात बंद कर दें. इसका मतलब है कि हमारा खुद का सामान इतना सस्ता और अच्छा हो की विदेश का सामान छोड़ लोग हमारे देश में निर्मित सामान का उपयोग करें. क्योंकि कहा गया है कि जबरदस्ती कराया गया काम कुछ वर्ष लेकिन स्वेच्छा से किया गया काम उम्र भर चलता है.

आत्मनिर्भर भारत की संरचना में चिकित्सा, वस्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स, प्लास्टिक, खिलौने, रत्न एवं आभूषण, फार्मा, स्टील जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जाएगा ताकि स्थानीय निर्माण और निर्यात को बढ़ावा दिया जा सके.

इसी कड़ी में बैंको की भूमिका बहूत ही प्रबल रहने वाली है, क्युकी बैंक अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं. यह लोगों की आर्थिक जरूरतों को पूरा करने और रोजगार सृजन का बड़ा माध्यम हैं. गरीब से अमीर सभी को अपने जीवनयापन, कारोबार शुरू करने या उसमें बढ़ोत्तरी हेतु आर्थिक मदद की जरुरत पड़ती है, जिसे पूरा करने का

काम बैंक कर रहे हैं.

बैंक वित्तीय संस्थान हैं जो मौद्रिक लेनदेन में सौदा करते हैं. बैंक किसी भी समाज का अभिन्न अंग हैं. बैंकिंग प्रणाली वह प्रणाली है जिसमें पैसा जमा करना और उधार देना शामिल है. भारत वर्ष में बैंकिंग व्यवसाय की प्रथा अति प्राचीनकाल से ही किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है. तब से लेकर अब तक इसके स्वरूप में निरन्तर परिवर्तन होता रहा है. वर्तमान में किसी भी देश की वित्तीय व्यवस्था और सामाजिक आर्थिक निर्माण में बैंकों का अपना विशिष्ट स्थान है.

इस महत्वपूर्ण स्थान को पाने के लिये बैंकों ने निरंतर परिवर्तनशील व्यवस्था का एक लम्बा और कठिन सफर तय किया है. वर्तमान में बैंकिंग व्यवस्था का जो आधुनिक स्वरूप है, वह विकास के रथ पर सवार दृढ़ इच्छाशक्ति, चुनौतियों के दमन, बैंक कर्मचारियों की कर्मठता और विश्वास आधारित भावनाओं का मिश्रण है.

विगत वर्षों में भारत में शहरी क्षेत्रों के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी बैंकों की स्थापना ने देश के चहुंमुखी विकास की संभावनाओं को जीवंत किया है. वर्तमान में आधुनिक बैंकिंग का स्वरूप बहुत व्यापक हो गया है. परम्परागत बैंकिंग के स्थान पर अब सामाजिक–आर्थिक बैंकिंग अपना स्थान ग्रहण कर चुकी है.

कोरोना महामारी के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था में हुए नुकसान की भरपाई के लिये माननीय प्रधानमंत्रीजी ने जो राशि राहत के तौर पर देने की घोषणा की है उसी क्रम में सरकार द्वारा बैंकों को आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिये काम करने को कहा गया है.

कोरोना वायरस के संक्रमण के बाद लोगों के रोज़गार–स्वरोज़गार चले जाने एवं निजी उद्योग–धन्धों में नुकसान होने के चलते सभी की आर्थिक दशा खराब हो चुकी है. ऐसे में इन दिनों अर्थ–व्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए गरीब से अमीर तक, सभी के लिए बैंक आर्थिक मदद का काम कर रहे हैं, ताकि वे दोबारा आर्थिक तौर पर मज़बूत हो सकें.

बैंक भारत के किसानों को कई प्रकार के कृषि लोन दे रहा है, उनकी जरूरतों के हिसाब से लोन को लचीला बनाया जा रहा है ताकि उनकी सभी आर्थिक जरूरते पूरी हो सके. किसानों को बिना बिचौलिये के बाज़ार उपलब्ध कराया जा रहा है. बैंक किसानों को ज़मीन खरीदने, पोली हाउस बनाने, पशुपालन, मछलीपालन, मशरूम की खेती करने, हार्टीकल्चर, बकरीपालन, भेड़ पालन, मधुमक्खी पालन, ट्रैक्टर, पम्पसेट खरीदने आदि के लिए भी ऋण दे रहे हैं.

बैंक उद्योग व्यवसाई वर्ग अर्थात एमएसएमई कारोबारियों को सम्पत्ति के एवज़ में ऋण, सहर एवं गाँवों में पेट्रोल पम्प डीलरों को ऋण, वेयरहाउस में रखे अनाजों के बदले ऋण, मिलों के लिए ऋण, शिक्षा ऋण, दैनिक ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ऋण, हर दूर दराज के इलाको में मूलभूत सुविधाओं के लिए ऋण, स्कूल, कॉलेज खोलने के लिए ऋण, वाहन खरीद के लिए ऋण इत्यादि उपलब्ध करा रहे हैं.

कोरोना–काल में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई) के अंतर्गत शिशु, किशोर और तरुण नाम से तीन प्रकार के ऋण हर तरह के उद्योगों के लिए दिये जाते हैं. शिशु मुद्रा ऋण लेने वाले लाभार्थियों को कम ब्याज दर पर 50 हज़ार रुपये तक का ऋण और आसान शर्तों पर दिया जाता है. किशोर योजना के तहत स्वरोज़गार शुरू करने वाले व्यक्ति को 50 हज़ार रुपये से पाँच लाख रुपये तक, जबकि तरुण योजना के तहत कारोबार शुरू करने के लिए 5 लाख से 10 लाख रुपये तक का ऋण ज़रूरतमंदों को दिया जाता है.

आज बैंक सामाजिक आकांक्षाओं का भी संरक्षक है। बैंक की सीमा आम आदमी की सेवा करने तक पहुँच गयी है. बैंक सामाजिक संस्था है जो आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं अपितु अन्य क्षेत्रों में एक समाज कल्याण प्रेरक के रूप में मानी जाती है। समाज की समस्याएँ, जैसे–गरीबी हटाना, जीवन–स्तर सुधारना तथा मानव मात्र को नवीन गौरव प्रदान करते हुए उपभोक्ताओं की समुचित सेवा करना.

आधुनिक युग में राष्ट्र की अर्थव्यवस्था बैंकों द्वारा नियन्त्रित होती है. राष्ट्र एवं समाज के साथ बैंकों का घनिष्ठ सम्बन्ध है. बैंक ग्राहेक सेवा के माध्यम से ही समाज सेवा करते हैं. मानव का आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विकास बैंकों से जुडा है.

बैंकों के समक्ष अनेक महत्त्वपूर्ण दायित्व हैं उनमें से एक है हमारे उपेक्षाग्रस्त जनजाति समाज का उद्धार एवं उत्थान करना. उपेक्षित बर्ग को बैंक आत्मनिर्भर बनाने में योग देने में सक्षम है. अन्धे, बधिर तथा विकलांगों के संस्थानों को आर्थिक सहायता देकर बैंक उन्हें रोजगार के अवसर सुलभ कराते हैं. कृत्रिम अंग निर्मणि में भी बैंक सहायता दे रहे हैं.

नगरों के विकास में बैंक बढ़–चढ़कर अपना योगदान कर रहे हैं. मलिन बस्तियों के निवासियों, मध्यमवर्गीय परिवार के लोगों एवं अन्य तिरस्कृत समाज के लोगों को बैंक सहानुभूतिपूर्वक सहायता दे रहे हैं.

बैंक अपने से ग्रामीणों को जोड़ने, महिला सशक्तिकरण करने, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण या सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे ग्रामीणों को देने, डिजिटल लेन–देन को बढ़ावा देकर ग्रामीणों की पहुँच दुनिया के बाज़ारों तक करने, बिचौलियों की भूमिका को खत्म करने का काम कर रहे हैं. आज देश में लगभग हर जगह बैंक शाखाओं का जाल है. प्रधानमंत्री जनधन योजना की मदद से लगभग आधी आबादी बैंक से जुड़े चुकी हैं. बैंक, ग्रामीणों को वित्तीय रूप से साक्षर भी बना रहे हैं. बैंक देश को आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन आत्मनिर्भरता का भाव समाज में भी उत्पन्न होना चाहिए, क्योंकि आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए सरकार के साथ–साथ समाज के सभी वर्गों का सहयोग आवश्यक है.

अतः अंत में कहा जा सकता है की हम जिस राष्ट्र की मिट्टी में पले बढ़े हुए हैं जिस राष्ट्र का हमने खाया है, क्यों ना उस राष्ट्र का कर्ज हम स्वदेशी वस्तुओं को अपनाकर भारत को विकासशील नहीं बल्कि विकसित देशों में शामिल करें. तभी हम पूरी तरह से कह पाएंगे कि हां मैं भारत का निवासी हूं, एवं आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, मानसिक दृष्टिकोण से स्वतंत्र देश का आत्मनिर्भर नागरिक हू.

''जय जय है – जय हिंदी'

*****

एक–दो–तीन

पवन कुमार
क.सा.अधिकारी
रा.सा.का. (क्षे.स.प्र.)

एक

थोड़ा सा ही बचपन, ले उधार जिन्दगी से,
तेरी सुबह और शाम यूँ फुदकते बीत जाएगी,
उम्र को परखने की वो घड़ी नहीं आएगी,
दिन हो या रात,
मदमस्त परिंदा बन जा तू, देखता हूँ!
तन्हाई कैसे तेरे करीब आ जाएगी?

दो

वक्त की नजाकत को जब तक मैं समझ पाता,
वक्त मेरे हाथ से, फिसलता चला गया,
कभी उसने कहा था, एक बार मुस्करा दो,
अब मेरी मुस्कान ले, निकलता चला गया ।

तीन

तेरे पहलू में रहकर जिसने,
तेरे जलजले को देखा,
उसे यह उम्मीद नहीं है,
कि तूफान के बाद खामोशी भी होगी !

*****

हालात

श्री सुभाष त्रिवेदी
वरिष्ठ प्रबंधक (क्रेडिट)
बैंक ऑफ़ बड़ौदा

हालात ये जिंदगी सुधर तो गए हैं,
कुछ मेरी जिन्दा दिली कुछ उसकी बंदगी से,
अब तो मेरा बचपना भी लौट आया है,
तेरी शागिर्दगी से.

फूल भरी तस्वीरों से क्या नापते हो उनकी सख्सियत,
जिन्होंने खुद फूलों को हँसना सिखाया है,
धूप बारिश में भी नहीं है जरुरत उनको छाते की,
जिनके सर पे खुद ऊपर वाले का साया है.

तेरी मासूमियत पे न जाने कितने मरते होंगे,
मैं तो तेरी काबिलियत पे मरता हूँ,
मैं कुछ कम न मांग लूँ,
इसलिए दुवा करने से डरता हूँ.

ताजमहल बनवाऊँ,ऐसी हैसियत न थी मेरी,
किसी मुमताज का प्यार भी नसीब में नहीं आया
पर जिससे भी मुहब्बत की है मेरे दोस्त,
मैंने बड़ी शिद्दत से निभाया.
जिंदगी में जब कभी दौरे गम हो,
तेरे संग मेरी आँखे भी नम हों
हम दोनों एक दूजे को देख के यूँ मुस्कुराएँ,
कि गम में भी खुशियों का भरम हो.
एक तो उनकी बातों का असर इतना गहरा था,
ऊपर से ज़माने का भी सख्त पहरा था
इसलिए दोस्तों
कल रात मैंने उनको ख्वाबों में बुलाया था,
माफ़ करना मुलाकात लम्बी थी
इसलिए तुमसे न मिल पाया था.

गुजरे ख्वाबों में इतनी बार उनकी गलियों से,
कि राह के पत्थरों से भी रिश्ता बहाल कर बैठे.
देखो तो कितने मासूम और बेखबर हैं वो
मेरी गलियों में ही मेरे लिए रिश्ता निकाल के बैठे.

हर पत्ता हर शाख हरी है,
सावन का ये मंजर,
उनकी भी तस्वीर हरी है,
नहीं हट रही है मेरी नजर.

*****

नराकास, फैज़ाबाद की 13वी अर्द्ध–वार्षिक बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फ़ैज़ाबाद की 13 वीं अर्द्ध–वार्षिक बैठक का आयोजन दिनांक – 26.11.2021 को बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या के संयोजन में सभागार, बड़ौदा भवन, अयोध्या में किया गया. बैठक में समिति अध्यक्ष श्री अनिल कुमार झा सहित विशिष्ट अतिथि के रूप में बैंक ऑफ बड़ौदा, लखनऊ अंचल के अंचल प्रमुख श्री ब्रजेश कुमार सिंह; मार्गदर्शी संबोधन के लिये प्रधान कार्यालय, बड़ौदा से प्रमुख– राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री संजय सिंह; अंचल कार्यालय, लखनऊ से विशेष अतिथि के रूप में सहायक महाप्रबंधक (मा. सं. प्र.)

ऑनलाइन संगोष्ठी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैज़ाबाद के तत्वावधान में बैंक ऑफ़ बड़ौदा द्वारा संपर्क भाषा, राजभाषा और बैंकिंग क्षेत्र विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया. सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया से क्षेत्रीय प्रबंधक श्री सुरेश कुमार सिंह जी मुख्य अतिथि एवं संगोष्ठी समाहारक के रूप में उपस्थित थे. संगोष्ठी की अध्यक्षता समिति अध्यक्ष श्री अनिल कुमार झा जी ने की. संगोष्ठी का संचालन श्री नीरज कुमार सिंह, सदस्य सचिव, नराकास, फ़ैज़ाबाद द्वारा किया गया.

अन्य गतिविधियां

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन हिन्दी पखवाड़ा समारोह

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

केंद्रीय विद्यालय हिन्दी पखवाड़ा समारोह

विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिंदी

श्री अमित श्रीवास्तव
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय

"आ चल के तुझे मैं ले कर चलूं
इक ऐसे गगन के तले,
जहां गम भी न हो, आंसू भी न हो
बस प्यार ही प्यार मिले"

कहते हैं कि प्यार ममता एवं मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति किसी भाषा की मोहताज नहीं होती, वह हमारी आंखों से भी पढ़े जा सकते हैं, महसूस किये जा सकते हैं परंतु संपूर्ण विश्व में बोली जाने वाली सारी भाषाओं में हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो अपनी सारगर्भिता, मधुरता एवं हमारे भावों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने के लिये जानी जाती है. हिंदी भाषा देवनागरी लिपि से सजी–संवरी सरलतम भाषा है. मैं भारत के मन, प्राण एवं आत्मा कहे जाने वाले प्रदेश, उत्तर प्रदेश का वासी हूं जो इस राष्ट्र के हिंदी हृदय सम्राट के रूप में प्रसिद्ध है. हिंदी भाषी क्षेत्र का होते हुए भी मुझे भारतवर्ष के सुदूर दक्षिण में स्थित कर्नाटक प्रदेश से लेकर पूर्वोत्तर में स्थित असम एवं नागालैंड प्रदेशों में कार्य करने का स्वर्णिम अवसर नवोदय विद्यालय समिति एवं केंद्रीय विद्यालय संगठन के माध्यम से प्राप्त हुआ है, यह ऐसा अवसर रहा जिसने मेरे मन मस्तिष्क में हिंदुस्तान की वह छवि प्रस्तुत की जो अनुपम है, प्रेरणादायक एवं जीवनदायनी है. जीवन के इस सफर में भारतवर्ष की विरासत एवं संस्कृति को मन, प्राण एवं आत्मा से जो मैं समझ पाया और यह संदेश कि भारत का हर एक वासी उतना ही भारतवासी है जितना कि मैं और यह जीवन हर क्षण राष्ट्र के कल्याण एवं तरक्की के लिये प्रशस्त हो, अपने शरीर की रक्तवाहिनियों में संचारित रक्त की प्रत्येक बूंद में समाहित कर पाया तो इसमें हिंदी का योगदान अमूल्य एवं सर्वोपरि है.

बहुमूल्य दक्षिण भारत की धरती एवं शस्यश्यामला प्रकृति को अपने में समाहित किए हुए पूर्वोत्तर क्षेत्र के विभिन्न प्रदेशों में बसने वाले भारतवासियों के संपर्क सूत्र की भाषा हिंदी ही है. यह अलग बात है कि वे अपने प्रदेश में तमिल, तेलगु, मलायलम, कन्नड़, असमी, मणिपुरी आदि भाषा बोलते हैं. पर जब एक प्रदेश का वासी दूसरे प्रदेश के वासी से बोलता है, संवाद करता है तो वह हिंदी में ही बात करता है क्योंकि हिंदी सरल, सौम्य, मधुर एवं प्रभावशाली है. मन के भावों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में सक्षम है. दक्षिण एशिया महाद्विप में हिंदुस्तान एक ऐसा राष्ट्र है जिसको प्रकृति ने अपने अनुपम सौंदर्य एवं भरपूर प्राकृतिक संपदा प्रदान की है. यही प्राकृतिक संपदा और भारवर्ष का युवा मानव संसाधन, व्यापार के स्वर्णिम अवसर उत्पन्न करता है, भारत पूरे विश्व बाजार में व्यापार की दृष्टि से एक बहुत बड़ा बाजार है और इसमें व्यापार करने के अनेकों साधन एवं सहुलियत है. अत: विश्व भर से लोगों को व्यापार करने के लिये भारत में बोली जाने वाली हिंदी भाषा को सीखे बिना वह लाभ हासिल नहीं होगा जिसकी वे अपेक्षा करते हैं, इस कारण से संपूर्ण विश्व के लोग दक्षिण एशिया में स्थित भारत से व्यापार करने के लिये भी तीव्र गति से हिंदी सीख रहे हैं एवं इस तरह से हिंदी के प्रचार–प्रसार को विश्व पटल पर बढ़ावा मिल रहा है जो कि हिंदी की सर्वग्राह्यता को परिलक्षित करता है. इस तरह से हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति को भी प्रचार एवं प्रसार के सुनहरे अवसर मिल रहे हैं और यह राष्ट्र की उन्नति के लिये एक सकारात्मक संकेत है. भारत की गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत पर्यटन के भी सुअवसर प्रदान करती है. जितना ज्यादा पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा उतना ही हिंदी के प्रचार एवं प्रसार को भी बढ़ावा मिलेगा. जिस अंग्रेजी साम्राज्य ने इस भारवर्ष को वर्षों गुलामी की बेड़ियों में जकड़े रखा, मानवता एवं मनुष्यता को शर्मसार किया, आज यह स्वतंत्र भारत उसके सम्मुख गर्व से कह रहा है कि भारत का सूर्य

अब कभी भी अस्त नहीं होगा पर यह संभव होगा किसी पर अत्याचार करके नहीं, विस्तारवादी मानसिकता के सहारे नहीं बल्कि वसुधैव कुटुंबकम की भावना के बल पर, सर्वग्राह्यता एवं सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय की विचारधारा के सहारे क्योंकि हमारी भारतीय संस्कृति का उद्बोधन है :

अयं निज: परो वोर्त गणना लघुचेतेसाम.
उदारचरितानाम तु वसुधैव कुटुंबकम.

और इसे प्रतिस्थापित करने में हमारी मातृभाषा हमारी राजभाषा का महति योगदान है. इसकी प्रभावशाली उपस्थिति आज विश्व पटल पर स्थापित हो रही है. अत: नि:संकोच यह कहा जा सकता है कि हिंदी विश्व भाषा की ओर निरंतर अग्रसर है और वह दिन दूर नहीं जब हिंदी विश्वस्तर पर जन–जन की भाषा होगी, प्रभावशाली अभिव्यक्ति का साधन होगी.

जय हिन्द, जय भारत !

विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिंदी

श्री मयंक तिवारी
पी.जी.टी. हिंदी
जवाहर नवोदय विद्यालय

जैसा कि हम सब जानते हैं कि हिंदी आज राजभाषा से आगे बढ़कर लोगों को आपस में जोड़ रही है. हिंदी भाषा का वह रूप कितना रोमांचित कर देने वाला होता है, जब लंदन में बैठा अहिंदी भाषी व्यक्ति आपसे पूछता है – कैसे हैं आप? कहने का तात्पर्य है कि हिंदी आज राजभाषा, संपर्क भाषा या भाषा के अन्य रूपों से ऊपर उठकर सर्वव्यापी भाषा बन गयी है. देश के किसी भी कोने में हो, अगर आपको हिंदी आती है तो काम चल जाएगा.

भारत के बाहर है तो हाथ जोड़कर नमस्ते करते ही हिंदी भाषा की खुशबू आने लगती है. ऐसा प्रतीत होता है कि हम लंदन के थेम्स नदी के किनारे न खड़े होकर गंगा के किनारे खड़े हैं.

फेसबुक हो या व्हाट्सऐप की दुनिया, दोनों ने हिंदी को और अधिक विस्तार दिया है. जर्मनी में बैठे अपने विद्यार्थी से या हिंदी अध्यापक से हिंदी में चैट करते हुए पता चलता है कि हिंदी सर्वव्यापी भाषा बन रही है. बड़ी–बड़ी कंपनियों को मालूम है कि भारत में वस्तुओं को बेचना है तो एक ही रामबाण है – हिंदी भाषा में प्रचार. सफलता 100% मिलेगी.

वर्तमान सरकार के माननीय प्रधानमंत्री जी भी बखूबी इस सर्वव्यापी भाषा का प्रचार–प्रसार भारत के बाहर या अंदर करते हैं. तो कहने का तात्पर्य है कि हिंदी अब उस दीए की भांति नहीं रह गयी है, जो अंधेरे को दूर भगाती है, बल्कि वह सूरज बन चुकी है जो सारे संसार को वसुधैव कुटुंबकम का पाठ पढ़ाते हुए उन्हें आलोकित कर रही है.

विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिंदी

सृष्टि
सर्वे पर्यवेक्षक
रा.सा.का. (क्षे.स.प्र.)

जन जन को जो मिलाती है,
वो भाषा हिंदी कहलाती है.

हर साल 14 सितंबर से 21 सितंबर तक हिंदी दिवस पर राजभाषा दिवस अथवा हिंदी सप्ताह मनाया जाता है. इस सप्ताह में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है. हिंदी भाषा में सबसे अधिक बोले जाने वाला शब्द नमस्ते हैं. 21 जनवरी 1950 को संविधान के अनुच्छेद 343 में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दी गई. 1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन में महात्मा गांधी ने पहली बार हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने की बात कि. गांधीजी ने हिंदी को जनता की भाषा अभी कहां है. हिंदी के प्रति लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए हिंदी दिवस पर भाषा सम्मान शुरू किया गया. यह सम्मान देश के ऐसे व्यक्ति को दिया जाता है, जिन्होने लोगों के बीच हिंदी भाषा के उपयोग और उत्थान के विषय में योगदान दिया हो.

प्रस्तावना:

भारत पश्चिमी रीति–रिवाजों से बहुत प्रभावित है. भारतीय वहां के लोगों की तरह पोशाक पहनना चाहते हैं, उनकी जीवनशैली का पालन करना चाहते हैं, उनकी भाषा बोलना चाहते हैं और इसके अलावा हर चीज में उनके जैसा बनना चाहते हैं. वे यहां नहीं समझना चाहते कि भारतीय संस्कृति की विरासत और मूल्य पश्चिम की संस्कृति की तुलना में कहीं अधिक समृद्ध है. 14 सितंबर को मनाया जाने वाला हिंदी दिवस हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को सम्मान देने का एक तरीका है.

हिंदी मेरा ईमान है, हिंदी मेरी पहचान है.
हिंदी हूं मैं वतन भी मेरा, प्यारा हिंदुस्तान है.

हिंदी की उन्नति के लिए किए जा सकने वाले प्रयास:

1. लोगों को अपनी मानसिकता बदलनी चाहिए. अंग्रेजी ही आज के आधुनिक समाज में सब कुछ है, अंग्रेजी के बिना कोई समाज नहीं.
2. लोगों को लगता है, कि जो बच्चे हिंदी माध्यम स्कूलों में पढ़ते हैं वह कमजोर होते हैं और जीवन में कभी सफल नहीं हो पाएंगे। ऐसे लोगों को समझना होगा कि ज्ञान, ग्रहण करने की क्षमता और एकाग्रता पर निर्भर करता है। ना कि हिंदी और इंग्लिश मीडियम पर.
3. शिक्षा की भाषा, पर इसके विपरीत शोधों में यह देखा गया है, कि मातृभाषा में बच्चे किसी भी विषय को और अधिक तेजी से सीख पाते है.

हिंदी को हम श्रृंगार दे, मिलकर इसे सवार दे.
देकर उसे सम्मान हम, फिर से इसे निखार दें.

हिंदी भाषा का इतिहास:

हिंदी भाषा का साहित्यिक इतिहास 12 वीं शताब्दी का है. इस बीच हिंदी भाषा का आधुनिक अवतार जो वर्तमान समय में ज्यादातर उपयोग में है, लगभग 300 साल पहले का है. हम हिंदी दिवस को शैक्षणिक संस्थानों, स्कूलों, कालेजों और सरकारी कार्यालयों में बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं. आज के अत्याधिक व्यवसायिक वातावरण में जहां लोग अपनी जड़ों को याद रखने के लिए तैयार नहीं वहां हिंदी दिवस महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

हिंदी सूर कबीर है, हिंदी है रसखान.
आओ सब मिलकर करें, हिंदी का उत्थान.

*****

विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिंदी

सनी सोनी
वरिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी
रा.सा.का. (क्षे.स.प्र.)

किसी भी देश की भाषा उसकी संस्कृति की विरासत एवं संवाहक होती है. हमारा भारत देश भाषाओं की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध देश है यहां अनेक भाषाएं एवं बोलियां हैं जो साहित्यिक और सांस्कृतिक रूप से काफी समृद्ध हैं हिंदी न केवल हमारे देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करती हैं अभी तो विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है क्योंकि हिंदी एक सरल सहज होने के साथ–साथ सर्वग्राह्य भी है.

14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अनुरोध पर वर्ष 1953 से संपूर्ण देश एवं विदेशों में स्थित भारतीय दूतावासों एवं मिशनों में 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है.

बदलते समाज एवं व्यापक होती जरूरतों के बीच हिंदी में तेजी से अपने पंख पसारे हैं जो हिंदी भाषा के लिए शुभ संकेत है आज हिंदी विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है वर्ष 2011 की जनगणना आंकड़ों के अनुसार लगभग 42.2 करोड लोग हिंदी (50 बोलियों के साथ) को इस्तेमाल करते हैं विश्व के दैनिक समाचार पत्रों की दृष्टि से प्रथम 20 समाचार पत्रों में से 5 समाचार पत्र क्रमशः दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिंदुस्तान एवं राजस्थान पत्रिका का नाम है. दुनिया के 170 देशों में हिंदी पढ़ाई जाने लगी है मास्को दुनिया में हिंदी भाषा के अध्ययन अध्यापन का मुख्य केंद्र बन गया है. यहां से हिंदी में बीए एमए और पीएचडी की डिग्री भी दी जाती है यूएसए के हार्वर्ड, शिकागो, वाशिंगटन, मोंटाना, टैक्सास एवं कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय में हिंदी के पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं इसी प्रकार आस्ट्रेलिया, चीन, सिंगापुर, जापान, कोरिया में भी विश्वविद्यालयों में हिंदी पाठ्यक्रम पढ़ाई जा रहे हैं. फिजी में तो हिंदी को अनिवार्य रूप से पढ़ा जाता है.

वैश्विक स्तर पर भारत के बढ़ते आर्थिक, सामाजिक, सामरिक, राजनैतिक प्रभाव का ही असर है कि पिछले कुछ सालों में हमारे देश के प्रधानमंत्री संयुक्त राष्ट्र अपना भाषण हिंदी में देने लगे हैं जिसकी शुरुआत तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेई ने शुरू की. इस क्षेत्र में बॉलीवुड की भी अत्यंत प्रभावी भूमिका है. वर्ष 2001 में भारत सरकार द्वारा मारीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की जो हिंदी को वैश्विक भाषा बनाने के लिए महत्वपूर्ण कदम है. सचिवालय अंतरराष्ट्रीय हिंदी पत्रिका एवं हिंदी समाचार का प्रकाशन भी करता है.

हिंदी भाषा के अपने विशिष्ट फोंट का सर्जन जिसके द्वारा कोई अपनी भाषा को लिखते हुए हिंदी के देवनागरी लिपि को लिख सकते हैं जिससे वर्तमान के तकनीकी युग में हिंदी भाषा को नई पीढ़ी के प्रयोग के लिए सुगम बन सका.

भारत का बाजार एवं यहां पर निवेश के बढ़ते असर को देखते हुए आज भारत में हर कोई देश निवेश करना चाहता है. वैश्वीकरण के युग में भारत को एक अच्छा अवसर मिला है जिसके माध्यम से अपनी भाषा संस्कृति कला एवं विचारों को दुनिया भर में फैला सके हमारा आयुर्वेद, योगा, लोक कलाएं, लोक नृत्य, गीता, रामायण आदि ने भी हिंदी के प्रचार प्रसार में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. आज हमारा नमस्ते शब्द पूरी दुनिया में विख्यात है.

जय हिंद जय हिंदी

*****

रामधारी सिंह 'दिनकर'

रामधारी सिंह 'दिनकर' (23 सितम्बर 1908–24 अप्रैल 1974) हिन्दी के एक प्रमुख लेखक, कवि व निबन्धकार थे. वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित हैं.

'दिनकर' स्वतन्त्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतन्त्रता के बाद 'राष्ट्रकवि' के नाम से जाने गये. वे छायावादोत्तर कवियों की पहली पीढ़ी के कवि थे. एक ओर उनकी कविताओ में ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रान्ति की पुकार है तो दूसरी ओर कोमल श्रृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है. इन्हीं दो प्रवृत्तियों का चरम उत्कर्ष हमें उनकी कुरुक्षेत्र और उर्वशी नामक कृतियों में मिलता है.

'दिनकर' जी का जन्म 24 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में हुआ था. उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से इतिहास राजनीति विज्ञान में बीए किया. उन्होंने संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी और उर्दू का गहन अध्ययन किया था। बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक विद्यालय में अध्यापक हो गये. 1934 से 1947 तक बिहार सरकार की सेवा में सब–रजिस्टार और प्रचार विभाग के उपनिदेशक पदों पर कार्य किया. 1950 से 1952 तक लंगट सिंह कालेज मुजफ्फरपुर में हिन्दी के विभागाध्यक्ष रहे, भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति के पद पर 1963 से 1965 के बीच कार्य किया और उसके बाद भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार बने.

उन्हें पद्म विभूषण की उपाधि से भी अलंकृत किया गया. उनकी पुस्तक संस्कृति के चार अध्याय के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा उर्वशी के लिये भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया. अपनी लेखनी के माध्यम से वह सदा अमर रहेंगे.

द्वापर युग की ऐतिहासिक घटना महाभारत पर आधारित उनके प्रबन्ध काव्य कुरुक्षेत्र को विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ काव्यों में 74वाँ स्थान दिया गया.

1947 में देश स्वाधीन हुआ और वह बिहार विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रध्यापक व विभागाध्यक्ष नियुक्त होकर मुज़फ़्फ़रपुर पहुँचे. 1952 में जब भारत की प्रथम संसद का निर्माण हुआ, तो उन्हें राज्यसभा का सदस्य चुना गया और वह दिल्ली आ गए। दिनकर 12 वर्ष तक संसद–सदस्य रहे, बाद में उन्हें सन 1964 से 1965 ई. तक भागलपुर विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया. लेकिन अगले ही वर्ष भारत सरकार ने उन्हें 1965 से 1971 ई. तक अपना हिन्दी सलाहकार नियुक्त किया और वह फिर दिल्ली लौट आए. फिर तो ज्वार उमरा और रेणुका, हुंकार, रसवंती और द्वंद्वगीत रचे गए. रेणुका और हुंकार की कुछ रचनाऐं यहाँ–वहाँ प्रकाश में आईं और अग्रेज़ प्रशासकों को समझते देर न लगी कि वे एक ग़लत आदमी को अपने तंत्र का अंग बना बैठे हैं और दिनकर की फ़ाइल तैयार होने लगी, बात–बात पर क़ैफ़ियत तलब होती और चेतावनियाँ मिला करतीं. चार वर्ष में बाईस बार उनका तबादला किया गया.

रामधारी सिंह दिनकर स्वभाव से सौम्य और मृदुभाषी थे, लेकिन जब बात देश के हित–अहित की आती थी तो वह बेबाक टिप्पणी करने से कतराते नहीं थे. रामधारी सिंह दिनकर ने ये तीन पंक्तियां पंडित जवाहरलाल नेहरू के खिलाफ संसद में सुनाई थी, जिससे देश में भूचाल मच गया था. दिलचस्प बात यह है कि राज्यसभा सदस्य के तौर पर दिनकर का चुनाव पंडित नेहरु ने ही किया था, इसके बावजूद नेहरू की नीतियों की मुखालफत करने से वे नहीं चूके.

देखने में देवता सदृश्य लगता है
बंद कमरे में बैठकर गलत हुक्म लिखता है.
जिस पापी को गुण नहीं गोत्र प्यारा हो
समझो उसी ने हमें मारा है.

1962 में चीन से हार के बाद संसद में दिनकर ने इस कविता का पाठ किया जिससे तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू का सिर झुक गया था. यह घटना आज भी भारतीय राजनीती के इतिहास की चुनिंदा क्रांतिकारी घटनाओं में से एक है.

रे रोक युद्धिष्ठिर को न यहां जाने दे उनको स्वर्गधीर
फिरा दे हमें गांडीव गदा लौटा दे अर्जुन भीम वीर.

इसी प्रकार एक बार तो उन्होंने भरी राज्यसभा में नेहरू की ओर इशारा करते हुए कहा– "क्या आपने हिंदी को राष्ट्रभाषा इसलिए बनाया है, ताकि सोलह करोड़ हिंदीभाषियों को रोज अपशब्द सुनाए जा सकें?" यह सुनकर नेहरू सहित सभा में बैठे सभी लोगसन्न रह गए थे. किस्सा 20 जून 1962 का है. उस दिन दिनकर राज्यसभा में खड़े हुए और हिंदी के अपमान को लेकर बहुत सख्त स्वर में बोले। उन्होंने कहा–

> देश में जब भी हिंदी को लेकर कोई बात होती है, तो देश के नेतागण ही नहीं बल्कि कथित बुद्धिजीवी भी हिंदी वालों को अपशब्द कहे बिना आगे नहीं बढ़ते. पता नहीं इस परिपाटी का आरम्भ किसने किया है, लेकिन मेरा ख्याल है कि इस परिपाटी को प्रेरणा प्रधानमंत्री से मिली है. पता नहीं, तेरह भाषाओं की क्या किस्मत है कि प्रधानमंत्री ने उनके बारे में कभी कुछ नहीं कहा, किन्तु हिंदी के बारे में उन्होंने आज तक कोई अच्छी बात नहीं कही. मैं और मेरा देश पूछना चाहते हैं कि क्या आपने हिंदी को राष्ट्रभाषा इसलिए बनाया था ताकि सोलह करोड़ हिंदी भाषियों को रोज अपशब्द सुनाएं? क्या आपको पता भी है कि इसका दुष्परिणाम कितना भयावह होगा?

यह सुनकर पूरी सभा सन्न रह गई. ठसाठस भरी सभा में भी गहरा सन्नाटा छा गया. यह मुर्दा–चुप्पी तोड़ते हुए दिनकर ने फिर कहा– 'मैं इस सभा और खासकर प्रधानमंत्री नेहरू से कहना चाहता हूं कि हिंदी की निंदा करना बंद किया जाए. हिंदी की निंदा से इस देश की आत्मा को गहरी चोट पहुँचती है.'

उन्होंने सामाजिक और आर्थिक समानता और शोषण के खिलाफ कविताओं की रचना की. एक प्रगतिवादी और मानववादी कवि के रूप में उन्होंने ऐतिहासिक पात्रों और घटनाओं को ओजस्वी और प्रखर शब्दों का तानाबाना दिया. उनकी महान रचनाओं में रश्मिरथी और परशुराम की प्रतीक्षा शामिल है. उर्वशी को छोड़कर दिनकर की अधिकतर रचनाएँ वीर रस से ओतप्रोत है. भूषण के बाद उन्हें वीर रस का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है.

ज्ञानपीठ से सम्मानित उनकी रचना उर्वशी की कहानी मानवीय प्रेम, वासना और सम्बन्धों के इर्द–गिर्द घूमती है. उर्वशी स्वर्ग परित्यक्ता एक अप्सरा की कहानी है. वहीं, कुरुक्षेत्र, महाभारत के शान्ति–पर्व का कवितारूप है. यह दूसरे विश्वयुद्ध के बाद लिखी गयी रचना है. वहीं सामधेनी की रचना कवि के सामाजिक चिन्तन के अनुरुप हुई है. संस्कृति के चार अध्याय में दिनकरजी ने कहा कि सांस्कृतिक, भाषाई और क्षेत्रीय विविधताओं के बावजूद भारत एक देश है. क्योंकि सारी विविधताओं के बाद भी, हमारी सोच एक जैसी है.

काव्य

1. बारदोली–विजय संदेश (1928)
2. प्रणभंग (1929)
3. रेणुका (1935)
4. हुंकार (1938)
5. रसवन्ती (1939)
6. द्वंद्वगीत (1940)
7. कुरूक्षेत्र (1946)
8. धूप–छाँह (1947)
9. सामधेनी (1947)
10. बापू (1947)
11. इतिहास के आँसू (1951)
12. धूप और धुआँ (1951)
13. मिर्च का मज़ा (1951)
14. रश्मिरथी (1952)
15. दिल्ली (1954)
16. नीम के पत्ते (1954)
17. नील कुसुम (1955)
18. सूरज का ब्याह (1955)
19. चक्रवाल (1956)
20. कवि–श्री (1957)

21. सीपी और शंख (1957)
22. नये सुभाषित (1957)
23. लोकप्रिय कवि दिनकर (1960)
24. उर्वशी (1961)
25. परशुराम की प्रतीक्षा (1963)
26. आत्मा की आँखें (1964)
27. कोयला और कवित्व (1964)
28. मृत्ति–तिलक (1964) और
29. दिनकर की सूक्तियाँ (1964)
30. हारे को हरिनाम (1970)
31. संचियता (1973)
32. दिनकर के गीत (1973)
33. रश्मिलोक (1974)
34. उर्वशी तथा अन्य शृंगारिक कविताएँ (1974)

गद्य

35. मिट्टी की ओर 1946
36. चित्तौड़ का साका 1948
37. अर्धनारीश्वर 1952
38. रेती के फूल 1954
39. हमारी सांस्कृतिक एकता 1955
40. भारत की सांस्कृतिक कहानी 1955
41. संस्कृति के चार अध्याय 1956
42. उजली आग 1956
43. देश–विदेश 1957
44. राष्ट्र–भाषा और राष्ट्रीय एकता 1955
45. काव्य की भूमिका 1958
46. पन्त–प्रसाद और मैथिलीशरण 1958
47. वेणुवन 1958
48. धर्म, नैतिकता और विज्ञान 1969
49. वट–पीपल 1961
50. लोकदेव नेहरू 1965
51. शुद्ध कविता की खोज 1966
52. साहित्य–मुखी 1968
53. राष्ट्रभाषा आंदोलन और गांधीजी 1968
54. हे राम! 1968
55. संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ 1970
56. भारतीय एकता 1971
57. मेरी यात्राएँ 1971
58. दिनकर की डायरी 1973
59. चेतना की शिला 1973
60. विवाह की मुसीबतें 1973
61. आधुनिक बोध 1973

कृतियाँ

उन्होंने सामाजिक और आर्थिक समानता और शोषण के खिलाफ कविताओं की रचना की. एक प्रगतिवादी और मानववादी कवि के रूप में उन्होंने ऐतिहासिक पात्रों और घटनाओं को ओजस्वी और प्रखर शब्दों का तानाबाना दिया. उनकी महान रचनाओं में रश्मिरथी और परशुराम की प्रतीक्षा शामिल है. उर्वशी को छोड़कर दिनकर की अधिकतर रचनाएँ वीर रस से ओतप्रोत है. भूषण के बाद उन्हें वीर रस का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है.

ज्ञानपीठ से सम्मानित उनकी रचना उर्वशी की कहानी मानवीय प्रेम, वासना और सम्बन्धों के इर्द–गिर्द घूमती है. उर्वशी स्वर्ग परित्यक्ता एक अप्सरा की कहानी है. वहीं, कुरुक्षेत्र, महाभारत के शान्ति–पर्व का कवितारूप है. यह दूसरे विश्वयुद्ध के बाद लिखी गयी रचना है. वहीं सामधेनी की रचना कवि के सामाजिक चिन्तन के अनुरुप हुई है. संस्कृति के चार अध्याय में दिनकरजी ने कहा कि सांस्कृतिक, भाषाई और क्षेत्रीय विविधताओं के बावजूद भारत एक देश है. क्योंकि सारी विविधताओं के बाद भी, हमारी सोच एक जैसी है.

विशिष्ट महत्त्व

दिनकर जी की प्राय: 50 कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं. हिन्दी काव्य छायावाद का प्रतिलोम है, यह कहना तो शायद उचित नहीं होगा पर इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दी काव्य जगत पर छाये छायावादी कुहासे को काटने वाली शक्तियों में दिनकर की प्रवाहमयी, ओजस्विनी कविता के स्थान का विशिष्ट महत्त्व है. दिनकर छायावादोत्तर काल के कवि हैं, अत: छायावाद की उपलब्धियाँ उन्हें विरासत में मिलीं पर उनके काव्योत्कर्ष का काल छायावाद की रंगभरी सन्ध्या का समय था.

द्विवेदी युगीन स्पष्टता

कविता के भाव छायावाद के उत्तरकाल के निष्प्रभ शोभादीपों से सजे–सजाये कक्ष से ऊब चुके थे, बाहर की मुक्त वायु और प्राकृतिक प्रकाश और चाहतेताप का संस्पर्श थे. वे छायावाद के कल्पनाजन्य निर्विकार मानव के खोखलेपन से परिचित हो चुके थे, उस पार की दुनिया के अलभ्य सौन्दर्य का यथेष्ट स्वप्न दर्शन कर चुके थे,

चमचमाते प्रदेश में संवेदना की मरीचिका के पीछे दौड़ते थक चुके थे, उस लाक्षणिक और अस्वाभिक भाषा शैली से उनका जी भर चुका था, जो उन्हें बार–बार अर्थ की गहराइयों की झलक सी दिखाकर छल चुकी थी. उन्हें अपेक्षा थी भाषा में द्विवेदी युगीन स्पष्टता की, पर उसकी शुष्कता की नहीं, व्यक्ति और परिवेश के वास्तविक संस्पर्श की, सहजता और शक्ति की। 'बच्चन' की कविता में उन्हें व्यक्ति का संस्पर्श मिला, दिनकर के काव्य में उन्हें जीवन समाज और परिचित परिवेश का संस्पर्श मिला. दिनकर का समाज व्यक्तियों का समूह था, केवल एक राजनीतिक तथ्य नहीं था.

द्विवेदी युग और छायावाद

आरम्भ में दिनकर ने छायावादी रंग में कुछ कविताएँ लिखीं, पर जैसे–जैसे वे अपने स्वर से स्वयं परिचित होते गये, अपनी काव्यानुभूति पर ही अपनी कविता को आधारित करने का आत्म विश्वास उनमें बढ़ता गया, वैसे ही वैसे उनकी कविता छायावाद के प्रभाव से मुक्ति पाती गयी पर छायावाद से उन्हें जो कुछ विरासत में मिला था, जिसे वे मनोनुकूल पाकर अपना चुके थे, वह तो उनका हो ही गया.

उनकी काव्यधारा जिन दो कुलों के बीच में प्रवाहित हुई, उनमें से एक छायावाद था. भूमि का ढलान दूसरे कुल की ओर था, पर धारा को आगे बढ़ाने में दोनों का अस्तित्व अपेक्षित और अनिवार्य था. दिनकर अपने को द्विवेदी युगीन और छायावादी काव्य पद्धतियों का वारिस मानते थे. उन्हीं के शब्दों में "पन्त के सपने हमारे हाथ में आकर उतने वायवीय नहीं रहे, जितने कि वे छायावाद काल में थे," किन्तु द्विवेदी युगीन अभिव्यक्ति की शुभ्रता हम लोगों के पास आते–जाते कुछ रंगीन अवश्य हो गयी. अभिव्यक्ति की स्वच्छन्दता की नयी विरासत हमें आप से आप प्राप्त हो गयी.

आत्म परीक्षण

दिनकर ने अपने कृतित्व के विषय में एकाधिक स्थानों पर विचार किया है। सम्भवत: हिन्दी का कोई कवि अपने ही कवि कर्म के विषय में दिनकर से अधिक चिन्तन व आलोचना न करता होगा. वह दिनकर की आत्मरति का नहीं, अपने कवि कर्म के प्रति उनके दायित्व के बोध का प्रमाण है कि वे समय–समय पर इस प्रकार आत्म परीक्षण करते रहे. इसी कारण अधिकतर अपने बारे में जो कहते थे, वह सही होता था. उनकी कविता प्राय: छायावाद की अपेक्षा द्विवेदी युगीन स्पष्टता, प्रसाद गुण के प्रति आस्था और मोह, अतीत के प्रति आदर प्रदर्शन की प्रवृत्ति, अनेक बिन्दुओं पर दिनकर की कविता द्विवेदी युगीन काव्यधारा का आधुनिक ओजस्वी, प्रगतिशील संस्करण जान पड़ती है. उनका स्वर भले ही सर्वदा, सर्वथा 'हुंकार' न बन पाता हो, 'गुंजन' तो कभी भी नहीं बनता.

सामाजिक चेतना के चारण

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी: वे अहिन्दीभाषी जनता में भी बहुत लोकप्रिय थे क्योंकि उनका हिन्दी प्रेम दूसरों की अपनी मातृभाषा के प्रति श्रद्धा और प्रेम का विरोधी नहीं, बल्कि प्रेरक था.

हरिवंशराय बच्चन: दिनकर जी ने श्रमसाध्य जीवन जिया. उनकी साहित्य साधना अपूर्व थी। कुछ समय पहले मुझे एक सज्जन ने कलकत्ता से पत्र लिखा कि दिनकर को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलना कितना उपयुक्त है? मैंने उन्हें उत्तर में लिखा था कि यदि चार ज्ञानपीठ पुरस्कार उन्हें मिलते, तो उनका सम्मान होता– गद्य, पद्य, भाषणों और हिन्दी प्रचार के लिए.

अज्ञेय: उनकी राष्ट्रीयता चेतना और व्यापकता सांस्कृतिक दृष्टि, उनकी वाणी का ओज और काव्यभाषा के तत्त्वों पर बल, उनका सात्त्विक मूल्यों का आग्रह उन्हें पारम्परिक रीति से जोड़े रखता है.

रामवृक्ष बेनीपुरी: हमारे क्रान्ति–युग का सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व कविता में इस समय दिनकर कर रहा है. क्रान्तिवादी को जिन–जिन हृदय–मंथनों से गुजरना होता है, दिनकर की कविता उनकी सच्ची तस्वीर रखती है.

नामवर सिंह: दिनकर जी सचमुच ही अपने समय के सूर्य की तरह तपे. मैंने स्वयं उस सूर्य का मध्याह्न भी देखा है और अस्ताचल भी. वे सौन्दर्य के उपासक और प्रेम के पुजारी भी थे. उन्होंने 'संस्कृति के चार अध्याय' नामक

विशाल ग्रन्थ लिखा है, जिसे पं. जवाहर लाल नेहरू ने उसकी भूमिका लिखकर गौरवन्वित किया था. दिनकर बीसवीं शताब्दी के मध्य की एक तेजस्वी विभूति थे.

राजेन्द्र यादव: दिनकरजी की रचनाओं ने मुझे बहुत प्रेरित किया.

काशीनाथ सिंह: दिनकरजी राष्ट्रवादी और साम्राज्य–विरोधी कवि थे.

दिनकर का नाम प्रगतिवादी कवियों में लिया जाता था, पर अब शायद साम्यवादी विचारक उन्हें उस विशिष्ट पंक्ति में स्थान देने के लिए तैयार न हों, क्योंकि आज का दिनकर ''अरुण विश्व की काली जय हो! लाल सितारों वाली जय हो''? के लेखक से बहुत दूर जान पड़ता है. जो भी हो, साम्यवादी विचारक आज के दिनकर को किसी भी पंक्ति में क्यों न स्थान देना चाहे, इससे इंकार किया ही नहीं जा सकता कि जैसे बच्चन मूलत: एकांत व्यक्तिवादी कवि हैं, वैसे ही दिनकर मूलत: सामाजिक चेतना के चारण हैं.

दिनकर की शैली

दिनकर आधुनिक कवियों की प्रथम पंक्ति में बैठने के अधिकारी हैं, इस पर दो राय नहीं हो सकती. उनकी कविता में विचार तत्त्व की कमी नहीं है, यदि अभाव है तो विचार तत्त्व के प्राचुर्य के अनुरूप गहराई का. उनके व्यक्तित्व की छाप उनकी प्रत्येक पंक्ति पर है, पर कहीं–कहीं भावक को व्यक्तित्व की जगह वक्तृत्व ही मिल पाता है. दिनकर की शैली में प्रसादगुण यथेष्ट हैं, प्रवाह है, ओज है, अनुभूति की तीव्रता है, सच्ची संवेदना है. यदि कमी खटकती है तो तरलता की, घुलावट की. पर यह कमी कम ही खटकती है, क्योंकि दिनकर ने प्रगीत कम लिखे हैं. इनकी अधिकांश रचनाओं में काव्य की शैली रचना के विषय और 'मूड' के अनुरूप हैं. उनके चिन्तन में विस्तार अधिक और गहराई कम है, पर उनके विचार उनके अपने ही विचार हैं. उनकी काव्यनुभूति के अविच्छेद्य अंग हैं, यह स्पष्ट है. यह दिनकर की कविता का विशिष्ट गुण है कि जहाँ उसमें अभिव्यक्ति की तीव्रता है, वहीं उसके साथ ही चिन्तन–मनन की प्रवृत्ति भी स्पष्ट दिखती है.

जीवन–दर्शन

उनका जीवन–दर्शन उनका अपना जीवन–दर्शन है, उनकी अपनी अनुभूति से अनुप्राणित, उनके अपने विवेक से अनुमोदित परिणामत: निरन्तर परिवर्तनशील है. दिनकर प्रगतिवादी, जनवादी, मानववादी आदि रहे हैं और आज भी हैं, पर 'रसवन्ती' की भूमिका में यह कहने में उन्हें संकोच नहीं हुआ कि ''प्रगति शब्द में जो नया अर्थ ठूँसा गया है, उसके फलस्वरूप हल और फावड़े कविता का सर्वोच्च विषय सिद्ध किये जा रहे हैं और वातावरण ऐसा बनता जा रहा है कि जीवन की गहराइयों में उतरने वाले कवि सिर उठाकर नहीं चल सकें''.

गांधीवादी और अहिंसा के हामी होते हुए भी 'कुरुक्षेत्र' में वह कहते नहीं हिचके कि कौन केवल आत्मबल से जूझकर, जीत सकता देह का संग्राम है, पाशविकता खड्ग जो लेती उठा, आत्मबल का एक वश चलता नहीं. योगियों की शक्ति से संसार में, हारता लेकिन नहीं समुदाय है.

बाल–साहित्य

जो कवि सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति सचेत हैं तथा जो अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित हैं, प्रतिबद्ध हैं, वे बाल–साहित्य लिखने के लिए भी अवकाश निकाल लेते हैं. विश्व–कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे अतल–स्पर्शी रहस्यवादी महाकवि ने कितना बाल–साहित्य लिखा है, यह सर्वविदित है. अत: दिनकर जी की लेखनी ने यदि बाल–साहित्य लिखा है तो वह उनके महत्त्व को बढ़ाता ही है. बाल–काव्य विषयक उनकी दो पुस्तिकाएँ प्रकाशित हुई हैं — 'मिर्च का मजा' और 'सूरज का ब्याह'. 'मिर्च का मजा' में सात कविताएँ और 'सूरज का ब्याह' में नौ कविताएँ संकलित हैं. 'मिर्च का मजा' में एक मूर्ख क़ाबुलीवाले का वर्णन है, जो अपने जीवन में पहली बार मिर्च देखता है. मिर्च को वह कोई फल समझ जाता है–

सोचा, क्या अच्छे दाने हैं, खाने से बल होगा,
यह ज़रूर इस मौसम का कोई मीठा फल होगा.

'सूरज का ब्याह' में एक वृद्ध मछली का कथन पर्याप्त तर्क–संगत है.

सामाजिक चेतना

दिनकर की प्रगतिशीलता साम्यवादी लीग पर चलने की प्रक्रिया का साहित्यिक नाम नहीं है, एक ऐसी सामाजिक

चेतना का परिणाम है, जो मूलत: भारतीय है और राष्ट्रीय भावना से परिचालित है. उन्होंने राजनीतिक मान्यताओं को राजनीतिक मान्यताएँ होने के कारण अपने काव्य का विषय नहीं बनाया, न कभी राजनीतिक लक्ष्य सिद्धि को काव्य का उद्देश्य माना, पर उन्होंने नि:संकोच राजनीतिक विषयों को उठाया है और उनका प्रतिपादन किया है, क्योंकि वे काव्यानुभूति की व्यापकता स्वीकार करते हैं. राजनीतिक दायित्वों, मान्यताओं और नीतियों का बोध सहज ही उनकी काव्यानुभूति के भीतर समा जाता है.

ओजस्वी–तेजस्वी स्वरूप

अलाउद्दीन ख़िलज़ी ने जब चित्तौड़ पर कब्ज़ा कर लिया, तब राणा अजय सिंह अपने भतीजे हम्मीर और बेटों को लेकर अरावली पहाड़ पर कैलवारा के क़िले में रहने लगे. राजा मुंज ने वहीं उनका अपमान किया था, जिसका बदला हम्मीर ने चुकाया. उस समय हम्मीर की उम्र सिर्फ़ ग्यारह साल की थी. आगे चलकर हम्मीर बहुत बड़ा योद्धा निकला और उसके हठ के बारे में यह कहावत चल पड़ी कि 'तिरिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार'. इस रचना में दिनकर जी का ओजस्वी–तेजस्वी स्वरूप झलका है. क्योंकि इस कविता की विषय–सामग्री उनकी रुचि के अनुरूप थी. बालक हम्मीर कविता राष्ट्रीय गौरव से परिपूर्ण रचना है. इस कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ पाठक के मन में गूँजती रहती हैं–

धन है तन का मैल, पसीने का जैसे हो पानी,
एक आन को ही जीते हैं इज्जत के अभिमानी.

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा था "दिनकर जी अहिंदीभाषियों के बीच हिन्दी के सभी कवियों में सबसे ज्यादा लोकप्रिय थे और अपनी मातृभाषा से प्रेम करने वालों के प्रतीक थे". हरिवंश राय बच्चन ने कहा था "दिनकरजी को एक नहीं, बल्कि गद्य, पद्य, भाषा और हिन्दी–सेवा के लिये अलग–अलग चार ज्ञानपीठ पुरस्कार दिये जाने चाहिये". रामवृक्ष बेनीपुरी ने कहा था "दिनकरजी ने देश में क्रान्तिकारी आन्दोलन को स्वर दिया". नामवर सिंह ने कहा है "दिनकरजी अपने युग के सचमुच सूर्य थे". प्रसिद्ध साहित्यकार राजेन्द्र यादव ने कहा था कि दिनकरजी की रचनाओं ने उन्हें बहुत प्रेरित किया. प्रसिद्ध रचनाकार काशीनाथ सिंह के अनुसार 'दिनकरजी राष्ट्रवादी और साम्राज्य–विरोधी कवि थे'.

दिनकरजी को उनकी रचना कुरुक्षेत्र के लिये काशी नागरी प्रचारिणी सभा, उत्तरप्रदेश सरकार और भारत सरकार से सम्मान मिला. संस्कृति के चार अध्याय के लिये उन्हें 1959 में साहित्य अकादमी से सम्मानित किया गया. भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद ने उन्हें 1959 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया. भागलपुर विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलाधिपति और बिहार के राज्यपाल जाकिर हुसैन, जो बाद में भारत के राष्ट्रपति बने, ने उन्हें डॉक्ट्रेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया. गुरू महाविद्यालय ने उन्हें विद्या वाचस्पति के लिये चुना. 1968 में राजस्थान विद्यापीठ ने उन्हें साहित्य–चूड़ामणि से सम्मानित किया. वर्ष 1972 में काव्य रचना उर्वशी के लिये उन्हें ज्ञानपीठ से सम्मानित किया गया. 1952 में वे राज्यसभा के लिए चुने गये और लगातार तीन बार राज्यसभा के सदस्य रहे.

30 सितम्बर 1987 को उनकी 13वीं पुण्यतिथि पर तत्कालीन राष्ट्रपति जैल सिंह ने उन्हें श्रद्धांजलि दी. 1999 में भारत सरकार ने उनकी स्मृति में डाक टिकट जारी किया. केंद्रीय सूचना और प्रसारण मन्त्री प्रियरंजन दास मुंशी ने उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर रामधारी सिंह दिनकर– व्यक्तित्व और कृतित्व पुस्तक का विमोचन किया.

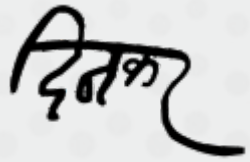

विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिन्दी

श्वेत शिखर त्रिपाठी
अधिकारी (विपणन)
पंजाब नैशनल बैंक

"हिंदी", शब्द सुनते ही एक अपनेपन का सा एक भाव मनोमस्तिष्क पर तैर जाता है. एक ऐसी भाषा जो भले ही सम्पूर्ण भारत तक में नही बोली जाती, मगर इसको एकदम ना समझने वाले बिरले ही होंगे. भारत में हिंदी मात्र एक भाषा ना होकर एक सेतु है जो देश के विभिन्न प्रांतों को आपस में जोड़ कर रखता है. हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसने किसी और भाषा को अपदस्थ कर अपने को सर्वोपरि घोषित नहीं किया बल्कि अन्य भाषाओं को अपना कुटम्ब मानकर उनके भी विकास में अहम योगदान दिया. संस्कृत हिंदी की जननी है, हिंदी का वर्तमान स्वरूप विकास के विभिन्न सोपानों से होते हुए यहां तक आ पहुँचा है. संस्कृत पाली प्राकृतिक भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुंचती है. फिर अपभ्रंश से होती हुई प्रारंभिक हिंदी का रूप लेती है.

हिंदी जिसको प्रकारांतर में यह कह कर खारिज करने की कोशिश की गई कि हिंदी तो सम्पूर्ण भारत तक में नही पहुँच पा रही कैसे ये विश्व में भारत का प्रतिनिधित्व कर पाएगी, जिसका जवाब आज हिंदी ने 130 देशों पहुँच कर दे दिया है. हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ फिजी की भी राजभाषा है, एवं मारीशस, सूरीनाम, गुयाना, त्रिदीनाद में क्षेत्रीय भाषा के रूप में सुशोभित है. हिंदी विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है. हिंदी की व्यापकता के कारण ही 175 से अधिक देशों में हिंदी शिक्षण और प्रशिक्षण के कई माध्यम केंद्र बन गए हैं. प्रकारांतर में अंग्रेजी को इंटरनेट की भाषा माना जाता था लेकिन यह धारणा यूनिकोड आने से बदल चुकी है. आज इंटरनेट के इस दौर में सूचना एवम् मनोरंजन के लिए हिंदी की खोज दिन पर दिन बढ़ती जा रही है. आधुनिक काल में हिंदी महज साजसज्जा की वस्तु ना होकर आमजन की रोजमर्रा की जरूरत बन चुकी है, जिसके बगैर विश्व की कल्पना करना बेमानी सा लगता है. चाहे वो तमाम लोकप्रिय विज्ञापन के जिंगल हो या हिंदी भाषाइयों को समर्पित विशेष सामग्री हो. यह विश्वपटल पर हिंदी की धमक ही है जिसने स्टार स्पोर्ट्स, ई. एस. पी. एन. जैसे खालिस अंग्रेजी चैनलों को हिंदी में उतरने पर मजबूर कर दिया. आज हिंदी ब्लॉगों की संख्या कई लाखों में जा पहुंची है, गूगल, विकिपीडिया जैसे बाजार के नायक अपने पाठकों के लिए हिन्दी सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध करा रहे हैं. अमरीका जैसी महाशक्ति का राष्ट्रपति अमरीका में नमस्ते कह कर अपनी जनता का दिल जीतने की कोशिश करता है. जैसा कि सर्वविदित है कि भारत सम्पूर्ण विश्व के लिए सबसे बड़ा बाजार है, और हिंदी इस बाजार के उपभोक्ता को आकर्षित करने का माध्यम. बड़े-बड़े बिजनेस स्कूल भले ही अपने पाठ्यक्रम को अंग्रेजदा बना रखे हैं मगर अपने विद्यार्थियों को ये ताकीद करना नही भूलते कि शीशे के केबिनों तक तो ये अंग्रेजी ठीक है मगर बाजार में उतरने पर लोकप्रिय हिंदी को गले लगाना पड़ेगा.

विश्वभाषा बनने के लिए एक जरूरी शर्त है भाषा शब्दकोष समृद्ध होना,इस दृष्टि से हमारी हिंदी निसंदेह अत्यंत समृद्ध भाषा है, जिसके पास ना सिर्फ प्राचीन काल से ही एक बड़ा खजाना रहा है, बल्कि समय-समय पर माँग के हिसाब से नए शब्दों को स्वयं में समाहित किया है. यह हिंदी ही है जिसने अरबी, फारसी, जर्मन जैसी अनेक भाषाओं के शब्दों को अपने शब्दकोष में स्थान दिया जिसका एकमात्र उद्देश इसको और लोकप्रिय बनाना है. और तो और हमारी हिंदी ने अब अन्य भाषाओं के शब्दकोष में भी जगह बनाना शुरू कर दिया है, लहंगा, आत्मनिर्भर जैसे हिंदी शब्द ऑक्सफ़र्ड के शब्दकोष में जुड़कर हिंदी भाषा को गौरांवित कर रहे है. हमारी हिंदी ने एकदम हमारी संस्कृति की तरह लोगों के दिलों पर अधिकार करने का कार्य किया है ना कि तलवार और षडयंत्रों के दम पर किसी को इसे अपनाने को बाध्य किया है.

वैश्विक स्तर पर तो हमारी हिंदी ने अपना परचम फहराया हुआ है मगर हमे देश के अंदर इसकी मुश्किलों को कम करने के प्रयास करने होंगे. कुछ समय पूर्व की घटना याद कर मन भारी सा हो जाता है, जब कर्नाटक राज्य की राजधानी बैंगलोर के मेट्रो स्टेशन पर लगी सूचनापट्टिका में हिंदी भाषा के प्रयोग के विरोध में राजनीति से प्रेरित हिंसक विरोध प्रदर्शन हुए. जो भाषा अपनी संपूर्णता की वजह से विश्व पटल पर हमारा नाम रौशन कर रही है उसको देश के भीतर ऐसे विरोधों का सामना करना पड़ रहा है. इन तमाम विरोधों एवम् मुश्किलों के बावजूद हिंदी विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है.

*****

"नानी की गौरी"

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

नानी का चेहरा आज दैदीप्यमान था, सूरज की सुबह–सुबह की किरणों सा दमक रहा था, उस चेहरे पर तेज़ ही कुछ ऐसा था, पर उस तेज में पूर्णिमा के चाँद सी शीतलता भी थी. आंखे, जिन्हें उम्र की गहरी लकीरों ने मानो लक्ष्मण रेखा में जकड़ लिया हो पर नानी की ख़ुशी के आगे आज कोई लकीर काम ना आती. बड़ी व्यस्त सी थीं आज नानी पुरे घर का मानों भार उठा रखीं थीं. ऐसे तो घुटनों के दर्द में करहाती रहतीं हैं, और उम्र की थकान से तो परेशान ही रहतीं हैं, पर आज उनकी फुर्ती देखते ही बन रही थी, उनके पुराने दर्द ने भी मानो जैसे कोई और नया ठिकाना ढूंढ लिया हो. हवा सी कभी इस कमरे में तो कभी उस कमरे में वो दौड़ती नजर आ रही थी। सुनीता नही आई थी आज, बर्तन जूठे ही रह गए थे. वैसे तो सुनीता आए ना आए, उनकी रसोई और बर्तन अपने समय से साफ हो जाते हैं, घर अपने समय पर अपनी निद्रा और उबासी छोड़ भोर के सूरज को अपने पास लाने को मानो तत्पर हो जाता है. पर आज ना जाने उनका दिल कहा लगा हुआ था, सुनीता के बिना उनका काम जैसे थम सा ही गया था. खैर, अब वो फिर अपने काम में जुट गई, एक नजर अपने काम पर तो दूसरी दिवार से लटकी घड़ी पर बार बार जा रही थी. वो कहते है ना की 'जब से घडी ली है बस टिक टिक करती रहती है ना खुद टिकती है ना ही टिकने देती है'! पर आज तो घड़ी भी अपनी किस्मत को इतरा रही थी, उसे लग रहा था जैसे उसके बिना आज एक पल भी गुज़ारना संभव ना हो, तभी तो अपनीं चाल, अपनी टिक टिक को घडी ने धीरे कर दिया था. कहा तो ये भी गया है की, 'इंतजार के पल बड़े लंबे होते हैं.' इन पल और पलों की तुकबंदी में नानी बड़ी बेसब्री से काम कर रहीं थीं, तो दूसरी तरफ गेट की तरफ भी एक नज़र लगा लेती थीं, और फिर टिक टिक करती घडी को भी निहार ही लेती थीं. ये सिलसिला पिछले 2 घंटे से बदस्तूर जारी था, बिना रुके, बिना थके बार बार दोहराया ही जा रहा था. मोबाइल की बैटरी भी आज फुल चार्ज थी, और आवाज़ अपने चरम उत्कर्ष पर थी, कि कहीं गलती से भी कोई फ़ोन रह ना जाए.

नानी ने पूरे घर को सलीके से सजा दिया था, सोफा कवर, पर्दे, बिस्तर सब एकदम सलीके से एक दुसरे के पूरक हों जैसे वैसे ही लगा दिए गए थे. डाइनिंग टेबल का कपडा एक तरफ से थोड़ा लटका हुआ था, जैसे ही नानी का ध्यान गया दौड़ कर उसको भी ठीक किया उन्होंने. घर में एक तरफ परात में गुलाब की पंखुड़ियों से भरा पानी रखा था. ठीक ऐसी ही परात में पुराने जमाने में राजा महाराजाओं के पैर धोए जाते थे. उसी के समीप एक नया तौलिया टंगा था. सेंटर टेबल पर एक छोटा पर बेहद खुबशुरत सा फूलों का गुलदस्ता था, यूँ कहिये की एक छोटा बागीचा ही था और 2 छोटी–छोटी माला भी साथ ही रखी हुई थी, और साथ ही रखा था अक्षत और कुम कुम भी.

अचानक से फोन बजा, नानी दौड़ कर फोन उठाती हैं, कुछ बात कर जल्दी ही फोन काट फिर सोफा के पास आ चहल कदमी करके लगती हैं. ये तो साफ झलक रहा था की आज का दिन कुछ खास था, पर क्या खास या ये पता नही चल पा रहा था.

फिर किसी खयालों में खोई हुई रसोई में घुस गईं. बहुत दिलकश खुशबू आ रही थी नानी की रसोई से, पक्का आज दावत पर आने वाला है कोई. ऐसे तो नानी हमेशा साधारण खाना ही बनाती थीं अपनी उम्र और पति की पसंद और सेहत को ध्यान में रखते हुए. पर कौन आने वाला था दावत पर ये सबसे बड़ा तिलस्म था जो समझ

नही आ रहा था. वैसे तो नानी को किसी की आव भगत करने का विशेष चाव था, पर आज की तैयारी बहुत ही खास थी. कुछ तोहफे भी रखे हुए थे, कुछ खिलौने, कपड़े, मिठाईया, टोफियाँ इत्यादि ऐसी बड़ी सारी तैयारी कर रखी थी नानी ने, जिसका मुआयना वो बार बार कर रही थी. वो किसी भी चीज के रह जाने की गुंजाइश नहीं छोड़ना चाहती थी.

खैर, नियति भी ये सब देख रही थी, नानी की मेहनत की दाद दे रही होगी, तभी सुनीता आखिर आ गई. राहत की सास ली नानी ने, उसको बोला, ''क्या सुनीता कहा था जल्दी आ जाना, पर तुम आज और दिन से भी लेट आई, कबसे इंतजार कर रही हूं!'' सुनीता ने एकदम से नज़र घुमा कर घर की साज सज्जा देखी, फिर जोर से हंस पड़ी! ठठा कर बोली, ''दादी घड़ी को ठीक से देखिए, रोज से मैं पूरे एक घंटे जल्दी आई हूं.'' ''क्या'', नानी ने कहा! ऐसा कैसे हो गया, नानी ने फिर अपनी बूढ़ी नजरें घड़ी की ओर घुमाई और ध्यान से देखते हुए थोड़ा झेपी और मुस्कुरा कर बोली, ''तो पहले आकर बताना था ना, कितना इंतजार करवाया ये बताने के लिए भी की तुम जल्दी आई हो'', और कहते ही दोनो हंस दिए। सुनीता अपने काम में लग गई झटपट, और नानी भी अब आखिरकार अपनी आराम कुर्सी पर बैठ आंखे बंद कर ही ली मानो अब जाकर चैन मिला उनको. पता ही नही चला कब वो अतीत की यादों में खो गई! कितनी धूम धाम से मनाया गया था उनका बरहौ संस्कार. वैसे तो हमारे समाज में लड़कियों को आज भी शायद एक अभिशाप ही माना जाता है. आज भी इतनी पढ़ाई और तरक्की के वावजूद इस भेदभाव के सामाजिक और मानसिक कुरीति से निजाद नही पा सके हैं हम. और ये नानी के जन्म और बरहौ की बात तो कम से कम पचास साल पहले की है. नानी की मां ने बताया था उनको, कि 3 बेटों के बाद एक बेटी के चरण घर में पड़ने पर उनके पिताजी ने खूब धूम धाम से उनका बरहौ संस्कार किया था. हालांकि प्रथा अनुसार ये संस्कार पुत्र रत्न की प्राप्ति पर ही किया जाता रहा है. पर नानी के पिताजी ने अपनी पुत्री के जन्म पर पूरे गांव को न्यौता दिया था, ढोल नगाड़े भी बजाए गए थे, मानो बेटी नही साक्षात लक्ष्मी घर पधारी हो। या यूँ कहे की एक राजा (महारानी) का आगमन हुआ हो! नानी जब बच्ची थी, तब उसके पैरों मे पायल की छन छन से सारा घर संगीतमय रहता था. वो एक पंछी की भांति इधर उधर निर्विघन विचरती रहती थीं. बड़े भाइयों ने उनका हांथ कभी ना छोड़ा था, और पिताजी का प्यार तो जैसे शहद से भरी गागर से शहद टपक रहा हो ऐसा था, शुरू होता तो अंत कहीं नहीं दिखता. खैर दिन बीतते गए और वो एक दिन ब्याह दी गईं. बस इतनी ही सी तो है बेटियों की जिन्दगी, अभी जीना शुरू किया नही की जैसे अंत आ गया। वो दीवारें जिसकी हर एक ईंट में बचपन जड़ा हुआ हैं, छूट जाता है हमेशा के लिए. फिर क्या, अपने ही घर में मेहमान बन जाते हैं. जिस घर में मेहमानों का सत्कार करना सीखा वहा खुद मेहमान बन जाने की पीड़ा एकदम ऐसी ही है जैसे बाढ़ के बाद बचे हुए मिट्टी के छेद, जिनमे बसेरा तो संभव है, पर जान नहीं. मिट्टी की सोंधी खुशबू, जिसे बचपन में हर एक बारिश में इत्र की तरह रूह में बसाया हो, कूए में हर बार गागर के पानी से मिलने की कहानी, आम के पेड़ पर बैठने वाली हर कोयल का संगीत, बौर की बौराने वाली खुशबू, खेतों में भरे हुए पानी, पास के तालाब में खिले हुए कमल दल, वही बना हुआ मंदिर, कैसे सब पराया सा हो जाता है! कैसे सब पीछे छूट जाता है, इतना पीछे की जिसे पाया ना जा सके, जिसे मुड़ कर देखने की भी फुर्सत और हिम्मत ना होती हो. कैसे किसी की सासें पराई हो जाती हैं, ये परिवर्तन, बस परिवर्तित होता रहता है, जब तक वो खुद को भूल नहीं जाते. ये बदलाव तब तक खुद को दोहराता है जब तक बारिश का सोंधापन, कोयल की कूक, मिट्टी के कंकड़, कमलदल, और यहां तक कि मंदिर भी रोमांचित करना ना बंद कर दे. ये सब अपने मायने ही जैसे खो देते हैं और ठीक ऐसे ही बदल जाते हैं जीवन के हर रिश्ते. जो अपने थे वो पराए हो गए, और जो पराए थे वो तो कभी अपने हुए ही नहीं, बस इसी अपने पराए की उथल पुथल में हर एक सांस पूरी होती जाती है और जिंदगी जीवन के हर पायदान पर आगे बढ़ती जाती है. हर एक नया पहलू जीवन में एक नया रंग लता जाता है, जो पुराने सपनो को ताश के पत्तों से बने घर की भांति गिरा

देता है, और उसी पर खड़ा कर देता है नया आकार, नई इमारत रिश्तों की, नए रिश्तों से जुड़े सपनो की, और उन नए अपनो में गुम होती हुई, दम घोंटती हुई पुराने ''मैं'' की.

''दादी! दादी!'' की आवाज़ से अचानक अपनी इस दिवास्वप्न से नानी चौंक कर जाग जाती हैं, और कहती है, ''अरे सुनीता! अभी तक तुम गई नहीं, बर्तन धूल गए सारे, कितना वक्त हो गया?'' सुनीता ने बड़ी ही शालीनता से जवाब दिया, ''बस पन्द्रह मिनट हुए मुझे आए ! सारे बर्तन धूल गए और रसोई में जमा दिए हैं मैने''! ''क्या बस पन्द्रह मिनट! ऐसा कैसे संभव है, मैने तो एक जीवन जैसे जी लिया हो पुनः एक बार, और तुम कहती हो सिर्फ पंद्रह मिनट!'' कुछ व्याकुलता के साथ नानी ने बोला! तभी सुनीता ने बोला, ''आज कोई आ रहा है दादी?'' उन्होंने पलट कर सुनीता को देखा! सुनीता दंग थी, इतना नूर दादी के चेहरे पर कभी नही देखा था उसने. ऐसे तो नानी एक बहुत ही संतुलित व्यक्तित्व वाली महिला थी. हर काज को सलीके और सूझ बूझ से करती थी, हर रिश्ते को खुशी और जिम्मेदारी से निभाया था उन्होंने, पर आज की उनकी खुशी उनके चेहरे से ऐसे टपक रही थी जैसे शरद पूर्णिमा की रात चांद से अमृत टपकता है. इससे पहले की नानी कुछ कह पाती, घंटी बजी और नीचे से आवाज आई ''मम्मी''! नानी बेतहाशा दौड़ी. सारी सुध बुध खो कर, खुशी में मदमस्त, सुनीता को बोलती हुई, ''आज मेरे घर में ''मैं'' आ रही हूं.'' आज मेरी नातिन, मेरी लक्ष्मी, मेरी गौरी मेरी आरुन्या आ रही हैं! ऐसे कहते हुए अपनी दो साल की नातिन, जो जन्म से अब तक उनके घर ना आए पाई थी, को अपनी गोद में उठा लिया. तभी मेघ घिरा आए आकाश में, धरा की जैसे तृष्णा बुझाने को, चातक से स्वाति को मिलाने को, बारिश झम झम गिरने लगी। नाजाने कितने बरस बाद नानी ने मिट्टी की सोंधी खुशबू से अपने घर, आंगन और रूह को महका लिया. फिर से वो कमल के पुष्पों के गुलाबी रंग, कोयल का मधुर संगीत, खेतों में भरे पानी, आम के बौर की खुशबू ने नानी को रोमांचित कर दिया, फिर से वो दौड़ी अपनी नातिन को लेकर मंदिर की ओर और ईश्वर का कोटि कोटि धन्यवाद दिया. नतमस्तक हो मेघों ने अश्रु वर्षा कर मानो ईश्वर का आशीर्वचन भेज दिया. एक बार फिर ऐसा लगा, बैरन धरती पर जैसे फसल लहलहाई हो, परात के पानी से नातिन (अपनी गौरी) के पैरों को धो कर उसी गुलाब की पंखुड़ियों से भरे जल का छिड़काव पूरे घर में करके उन्होंने अपने घर, मन, मंदिर, मस्तिष्क सबको पवित्र और रोमांचित कर लिया. समय मानो ठहर सा गया इन अनमोल पलों का एक मात्र गवाह बन गया! दोनों एक दुसरे को निहारते ही जा रहे और मन ही मन बातें कर रहे थे, गौरी की नानी आँखों से प्यार लुटा रही थीं, रुंधे हृदय से गा रहीं थीं, चांदनी के हसीन रथ पे सवार मेरे घर आई एक नन्ही परी उसकी बातों में शहद जैसी मिठास, उसकी सासों में इत्तर की महकास, होंठ जैसे के भीगे गुलाब, उसके आने से मेरे आंगन में गुनगुनायी बहार, देख कर उसको जी नहीं भरता चाहे देखूँ उसे हज़ारों बार! तो अब ये जग जान पाया की आज ''नानी की गौरी'' को आगमन उनके आँगन हो पाया!!

*****

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया.

– डॉ. राजेंद्र प्रसाद

खिलौने

श्री मुकेश मिश्रा
सहायक प्रबन्धक
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

मैं सिर्फ खिलौने ही नहीं अरमान बेचता हूँ
हर किसी के बचपन की पहचान बेचता हूँ

है बहुत कुछ मेरे पास,
छोटे से दिल को बहलाने के लिए,
मैं उम्मीद के जुगनुओं में जान बेचता हूँ
मैं सिर्फ खिलौने ही नहीं अरमान बेचता हूँ

टिमटिमाती हुई आंखों में रोशनी भर दूँ,
मासूम से हाथों पे खुशियां धर दूँ,
न जाने ऐसी कितनी पहचान बेचता हूँ
मैं सिर्फ खिलौने ही नहीं अरमान बेचता हूँ

बचपन की शैतानियां और
उस पर पड़ी हर डांट
मैं रूठे हुए चेहरों पर मुस्कान बेचता हूँ
मैं सिर्फ खिलौने ही नहीं अरमान बेचता हूँ

खिलौने गर टूट जायें तो
नए खिलौनों की चाहत होती है
उस नई चाहत के पंखों में नई जान बेचता हूँ
मैं सिर्फ खिलौने ही नहीं अरमान बेचता हूँ
हर किसी के बचपन की पहचान बेचता हूँ

माँ

श्री अतुल कुमार सिंह
अधिकारी (क्रेडिट विभाग)
बैंक ऑफ़ बड़ौदा

प्रेम–मयी तुम न्यारी सी तुम
हर पल में प्यारी सी तुम,
ठण्ड लगे तब गर्म धूप तुम
तपती धूप में वृक्ष रूप तुम,

भूल ना पाऊंगा वो प्यारी थपकी
तेरी गोद में नींद की झपकी,

दीपक घनघोर अँधेरे में तुम
एक नयी किरण सवेरे में तुम,
जब हूँ अकेला मित्र ख़ास तुम
मेरे जीवन की हरेक सांस तुम,

नौ माह पाला मुझे गर्भ में
तिल–तिल डूबा तेरे इस कर्ज़ में,
अद्भुत पल था मेरे पैदा होने पर
बस एक बार हसी तुम मेरे रोने पर,

क्या दू उपहार कुछ समझ ना आया है
कोई भगवान को भी कुछ दे पाया है
देना चाहता हूँ सर्वत्र मैं हूँ विवश पर
ना आने दूंगा आँसू तेरी आँखों में
वादा है मेरा तेरे जन्म–दिवस पर॥

सामाजिक पतन

श्री अतुल कुमार सिंह
अधिकारी (क्रेडिट विभाग)
बैंक ऑफ़ बड़ौदा

गाँव के बाहर बागीचे के पास आम, इमली और जामुन के पेड़ों के बीच प्राइमरी पाठशाला में टाट पर सलीके से बैठे बच्चे, कालिख पोतने के बाद छोटी शीशी से रगड़ कर चमकाई हुई तख्ती, नरकट को नुकीला कर बनाई हुई लेखनी और शीशी में घुला हुआ दूधिया पत्थर, कुछ ऐसा माहौल होता था. बस्ते का बोझ नहीं होता था. घर से लगभग एक किलोमीटर दूर कच्ची सड़क और पगडण्डी से होते हुए पैदल ही पाठशाला पहुँचते थे. सुबह विद्यालय परिसर की साफ़ सफाई से लेकर मास्टर जी की कुर्सी भी बच्चे ही लगा दिया करते थे. कभी–कभी तो थकान होने पर मास्टर साहब की मालिश भी कर दिया करते थे. शौचालय नहीं हुआ करते थे, मास्टर जी को एक या दो उंगली दिखा कर परिसर से दूर कहीं झाड़ियों में चले जाते थे. दिन भर गिनती पहाड़ा इमला में बीतने के बाद शाम को हँसते खेलते फिर उन्हीं पगडंडियों से सकुशल घर पहुँच जाते थे. विद्यालय में सात फुट ऊँची चहारदीवारी या हर एक कोने पर सीसीटीवी कैमरा नहीं था. सुरक्षा गार्ड भी नहीं थे. व्यवसायीकरण से दूर पाठशाला मंदिर जैसा पूजनीय था. समाज स्वस्थ था लोगों की सोच स्वस्थ थी जिसकी वजह से नौनिहाल एवं देश का भविष्य सुरक्षित था.

धीरे–धीरे पाठशालाएं प्रशिक्षणशाला या यूँ कहें कि धन उगाही करने वाली प्रयोगशालाओं में बदल गईं. संस्थाओं की चहारदीवारी ऊँची होती गयी और समाज की सोच नीची. विद्या पीठों में सीसीटीवी कैमरों की संख्या बढ़ती गयी लेकिन समाज ने अपनी आँखों पर पट्टी बांध लिया. समाज अस्वस्थ हो गया. आधुनिकरण में तो आगे बढ़ते गए लेकिन संस्कार, संस्कृति और मानसिकता पीछे छूट गए. लाख सुरक्षा उपायों के बावजूद विद्यालय परिसर में कभी प्रद्युम्न मारा जाता है तो कभी छोटी मासूम बच्चियों को हवस का शिकार बना दिया जाता है. कहीं न कहीं ये घटनाएं हमारे समाज के नैतिक पतन और कुंठित मानसिकता को प्रदर्शित करती हैं. हम शिक्षा तो दे रहे हैं लेकिन एक बेहतर समाज देने में अक्षम हैं. कड़े नियम कानून बनाने मात्र से समाज की उन्नति संभव नहीं है. जरुरत है तो दुराचार के पतन की, वासना के दमन की, जन जागरण की और नैतिक उत्थान की ताकि हम अपने आने वाली पीढ़ी को एक बेहतर समाज दे सकें.

*****

मानवता

क्या मर गई है मानवता
ना जानें क्यों ऐसा होता है
चादर चढ़ती मज़ारों पर
फ़कीर आसमां तले सोता है
मन्दिर पहुँच कर भी इंसान
कुछ यूं इन्सानियत खोता है
लड्डू–गोपाल जी वस्त्र पहनते
भिखारी ठण्ड में रोता है

ना जानें क्यों ऐसा होता है
रात होते ही बंद हो जाता
हर एक मन्दिर का ताला
पैदल–पथ पर जा कर देखो
ठिठुरते ग़रीबों की हाला
जा कर देखो बड़ी कोठियों में
कुत्ता भी कम्बल में सोता है
ना जानें क्यों ऐसा होता है.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैज़ाबाद – सदस्य कार्यालयों की सूची:

क्र. सं.	बैंक/कार्यालय का नाम	बैंक/कार्यालय का पता	कार्यालय प्रमुख का नाम व संपर्क विवरण	राजभाषा प्रभारी का नाम व संपर्क विवरण
1.	**बैंक ऑफ़ बड़ौदा** क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या	प्रथम तल, बड़ौदा भवन, साकेतपुरी आवासीय योजना, देवकाली बाईपास, अयोध्या – 224123	**श्री अनिल कुमार झा** अध्यक्ष, नराकास–फैज़ाबाद एवं क्षेत्रीय प्रमुख, बैंक ऑफ़ बड़ौदा मो. 9554968300 rm.faizabad@bankofbaroda.co.in	श्री नीरज कुमार सिंह सचिव, नराकास–फैज़ाबाद एवं राजभाषा प्रभारी, बैंक ऑफ़ बड़ौदा मो. 8904569156 rajbhasha.faizabad @bankofbaroda.co.in
2.	**दूरसंचार बीएसएनएल** कार्यालय महाप्रबंधक	कार्यालय महाप्रबंधक दूरसंचार बीएसएनएल अयोध्या – 224001	**श्री प्रभांश यादव** महाप्रबंधक मो. 9415222217 gmtdfaizb@bsnl.co.in	श्री जगन्नाथ तिवारी कनिष्ठ हिंदी अनुवादक मो. 9454587238 gmtdfy@gmail.com
3.	**पंजाब नैशनल बैंक** मण्डल कार्यालय, अयोध्या	देवकाली रोड, रीडगंज अयोध्या – 224001	**श्री के. एल. बैरवा** मंडल प्रमुख मो. 9004035058 cofzd@pnb.co.in	श्री संतोष कुमार वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) मो. 9260996069 cofzrajbhasha@pnb.co.in
4.	**भारतीय स्टेट बैंक** मुख्य शाखा	सिविल लाइंस फैज़ाबाद – 224001	**श्री केदारनाथ** मुख्य प्रबंधक मो. 7521900917 sibin.00075@sbi.co.in	
5.	**बैंक ऑफ इंडिया** मुख्य शाखा	मनूचा फ्लोर रिकाबगंज, अयोध्या – 224001	**श्री मोहम्मद शाहिद** मुख्य प्रबंधक मो. 9450954107 faizabad.varanasi @bankofindia.co.in	क्षितिज कुमार पाण्डेय अधिकारी मो. 7838122742
6.	**सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया** क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या	प्रथम तल, आर. एल. कॉम्प्लेक्स, निकट पारले बिस्कुट फैक्ट्री, देवकाली बाईपास, फैजाबाद, जिला अयोध्या – 224001	**श्री सुरेश कुमार सिंह** क्षेत्रीय प्रबंधक मो. 8303714301 rmayodro@centralbank.co.in	श्री सुरेन्द्र सिंह यादव प्रबंधक (राजभाषा) मो. 8303714296 hindiayodro@centralbank.co.in
7.	**यूको बैंक** मुख्य शाखा	150/165, दालमण्डी वार्ड, धनीराम निवास, रिकाबगंज, अयोध्या – 224001	**श्री मनोज कुमार सिंह** मुख्य प्रबंधक मो. 7003558561 faizab@ucobank.co.in	
8.	**केनरा बैंक** मुख्य शाखा	सिविल लाइंस अयोध्या – 224001	**श्री सौरभ शुक्ल** वरिष्ठ प्रबंधक मो. 8173007727 cb1641@canarabank.com	श्री रवि कुमार सिन्हा प्रबंधक (राजभाषा) मो. 9234525717 ravikumarsinha1@canarabank.com

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैज़ाबाद – सदस्य कार्यालयों की सूची:

क्र. सं.	बैंक/कार्यालय का नाम	बैंक/कार्यालय का पता	कार्यालय प्रमुख का नाम व संपर्क विवरण	राजभाषा प्रभारी का नाम व संपर्क विवरण
9.	**भारतीय जीवन बीमा निगम** मण्डल कार्यालय अयोध्या	"जीवन प्रकाश" अयोध्या रोड, बेनीगंज, अयोध्या – 224001	**श्री चंद्र सिंह दासपा** वरिष्ठ मंडल प्रबंधक मो. 9891144890 sdm.faizabad@licindia.com	श्री अजय कुमार श्रीवास्तव प्रशासनिक अधिकारी एवं राजभाषा प्रभारी मो. 9415719476 pir.faizabad@licindia.com
10.	**दि न्यू इंडिया एश्योरेंश कं. लिमि.** मण्डल कार्यालय अयोध्या	कोहिनूर होटल परिसर, रीडगंज अयोध्या – 224001	**श्री गुलशन वर्मा** मंडल प्रबंधक मो. 9033160656/9415076931 gulshan.verma@newindia.co.in	श्री ओ.पी. सिंह संपर्क अधिकारी (राजभाषा) मो. 9044259040 singh.om@newindia.co.in
11.	**यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंश कं. लिमि.** शाखा कार्यालय अयोध्या	1/13/356, सिविल लाइंस, होटल कृष्णा पैलेस के बगल, अयोध्या – 224001	**श्री आशीष त्रिपाठी** वरिष्ठ प्रबंधक मो. 9450601659 ashishtripathi@uiic.co.in	श्रीमती अनिता सिंह राजभाषा प्रभारी मो. 9580850046 anitasingh@uiic.co.in
12.	**इंडियन ओवरसीज़ बैंक** मुख्य शाखा	अल्का टॉवर रिकाबगंज, नियावां रोड अयोध्या – 224001	**श्री प्रियंक सिंह** मो. 889676444 iob.1429@iob.in	
13.	**पंजाब एंड सिंध बैंक** मुख्य शाखा	5/2/74, साहबगंज निकट पुलिस चौकी अयोध्या – 224001	**श्री सुनिल कुमार पांडे** शाखा प्रबंधक मो. 8127526708 f1375@psb.co.in	
14.	**आई डी बी आई बैंक लिमि.**	पुष्पराज, 1/13/330, सिविल लाइंस, अयोध्या – 224001	**श्री सरदेंदु विमल सिंह** शाखा प्रबंधक मो. 9619486077 ibkl0000398@idbi.co.in	सुश्री गरिमा श्रीवास्तव संपर्क अधिकारी मो. 7007592627
15.	**इंडियन बैंक** मुख्य शाखा	अल्का टॉवर, रिकाबगंज, नियावां रोड, अयोध्या – 224001	**श्री आशीष श्रीवास्तव** शाखा प्रबंधक मो. 7233002140 faizabad@indianbank.co.in	
16.	**बैंक ऑफ महाराष्ट्र**	आदर्श भवन बाबू बाजार अयोध्या – 224123	**श्री शैलेश कुमार** शाखा प्रबंधक मो. 8574234123 bom1704@mahabank.co.in	श्रीमती शानो द्विवेदी राजभाषा प्रभारी मो. 7706832238
17.	**यूनियन बैंक ऑफ इंडिया** क्षेत्रीय कार्यालय अयोध्या	436, अत्तरदीप कॉम्प्लेक्स, देवकाली बाईपास, फैजाबाद, अयोध्या – 224001	**श्री मुकुल श्रीवास्तव** क्षेत्र प्रमुख मो. 9987008677 rhayodhya@unionbankofindia.com	श्री रतन कुमार सिंह वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) मो.7008407571 rajbhasha.roayodhya @unionbankofindia.com

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैज़ाबाद – सदस्य कार्यालयों की सूची:

क्र. सं.	बैंक/कार्यालय का नाम	बैंक/कार्यालय का पता	कार्यालय प्रमुख का नाम व संपर्क विवरण	राजभाषा प्रभारी का नाम व संपर्क विवरण
18.	**आकाशवणी** अयोध्या	बेगमगंज गढ़ैया, धारामर्ग फैज़ाबाद, अयोध्या – 224001	**श्री राम मूर्ति मिश्रा** निदेशक (अभियांत्रिकी) मो. 9415116395 faizabad@air.org.in	श्री संजयधर द्विवेदी कार्यक्रम अधिशासी (प्रभारी हिंदी अधिकारी) मो. 9452288600 airfzd@rediffmail.com
19.	**नेशनल इंश्योरेंश कं. लिमि.**	4101, वी. स्कावयर सिविललाइंस, फैज़ाबाद अयोध्या – 224001	**श्री राम राज** वरिष्ठ शाखा प्रबंधक मो. 9451904441 ram.raj@nic.co.in	श्री दिलीप कुमार वरिष्ठ सहायक मो. 9453063027 450305@nic.co.in
20.	**केंद्रीय विद्यालय**	फैज़ाबाद कैंट अयोध्या – 224001	**श्री अमित श्रीवास्तव** प्राचार्य मो. 9473898869 kafaizabad@yahoo.co.in	श्री रजत कुमार पी. जी. टी, हिंदी मो. 9889730152
21.	**जवाहर नवोदय विद्यालय**	डाभासेमर अयोध्या – 224133	**श्री कृष्ण कुमार मिश्रा** प्राचार्य, मो. 9532884651 jnvfaizabad@gmail.com	श्री मयंक तिवारी पी.जी.टी. हिंदी मो. 9532884651
22.	**भारतीय खाद्य निगम**	3/19/141, एबी नियावां चौराहा, जमथरा रोड, गौरापट्टी, फैजाबाद – 224001	**श्री रजनीश कुमार** मण्डल प्रबंधक मो. 9076500141 faizaup.fci@gov.in	श्री रवीन्द्र कुमार प्रबंधक (हिंदी) मो. 9450767335
23.	**प्रधान डाकघर** फैज़ाबाद मण्डल	अयोध्या – 224001	**श्री आर. एन. यादव** प्रवर अधीक्षक–डाकघर मो. 05278222315 dofaizabad.up@indiapost.gov.in	श्री जयप्रकाश सहायक अधीक्षक मो. 9453298130
24.	**कार्यालय कमाण्डेंट–63 बटालियन**	केंद्रीय रिज़र्व पुलिस बल फैज़ाबाद, अयोध्या – 224001	**श्री छोटे लाल** कमांडिंग ऑफिसर – 63 बटालियन मो. 9450916404 co63bn@crpf.gov.in	श्री बर्मन हेड कांस्टेबल (राजभाषा प्रभारी) मो. 9475247187
25.	**राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय**	5/11/143, मुखर्जी निवास, रीडगंज (क्षेत्र संकाय विभाग) उप क्षेत्रीय कार्यालय अयोध्या – 224001	**श्री पवन कुमार गुप्ता** वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी मो. 6388149407 fodsrofzd@gmail.com	श्री पवन कुमार कनिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी मो. 9670700799 sharmapawan181@gmail.com
26.	**छावनी परिषद** कार्यालय	कार्यालय छावनी परिषद फैज़ाबाद छावनी – 224001	**श्री महेश वड्डे** आई. डी. ई. एस. मुख्य अधिशासी अधिकारी मो. 9839044960 cbfaizabad@digest.org	श्री संतोष कुमार चटर्जी राजभाषा प्रतिनिधि मो. 6388588780

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह, कानपुर

माननीय गृह राज्य मंत्री के कर–कमलों से प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए सदस्य सचिव (नराकास, फैज़ाबाद).

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैज़ाबाद की 13वी अर्द्ध–वार्षिक बैठक

भारतीय स्टेट बैंक

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया

यूनियन बैंक Union Bank

बैंक ऑफ इंडिया

केनरा बैंक Canara Bank

बैंक ऑफ महाराष्ट्र

यूको बैंक

इंडियन बैंक Indian Bank
इलाहाबाद ALLAHABAD

pnb Oriental United
Together for the better

इण्डियन ओवरसीज बैंक

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

युनाइटेड इंडिया
UNITED INDIA

नेशनल इन्श्योरेन्स
National Insurance

IDBI BANK

NSSO

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

छावनी परिषद्, फैजाबाद
Cantonment Board, Faizabad

बीएसएनएल
भारत को जोड़े

आकाशवाणी

संयोजक

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद